वर्ष 47, अंक 01, वीर संवत् 2552, अगस्त 2026, इन्दौर 452 001
डाक Registered No. MP/IDC/113/2024-2026 RNI/HIN/37-1982
मूल्य 20 रुपए
प्रकाशन तारीख 27.08.2026, प्रेषण तारीख 29.08.2026, प्रेषण स्थल – RMS इन्दौर

श्री जैन सेवा समिति श्वेताम्बर इन्दौर द्वारा प्रकाशित

# जैन प्रतीक

समग्र जैन समाज का मासिक पत्र

प्रधान सम्पादक
नरेन्द्रकुमार रांका

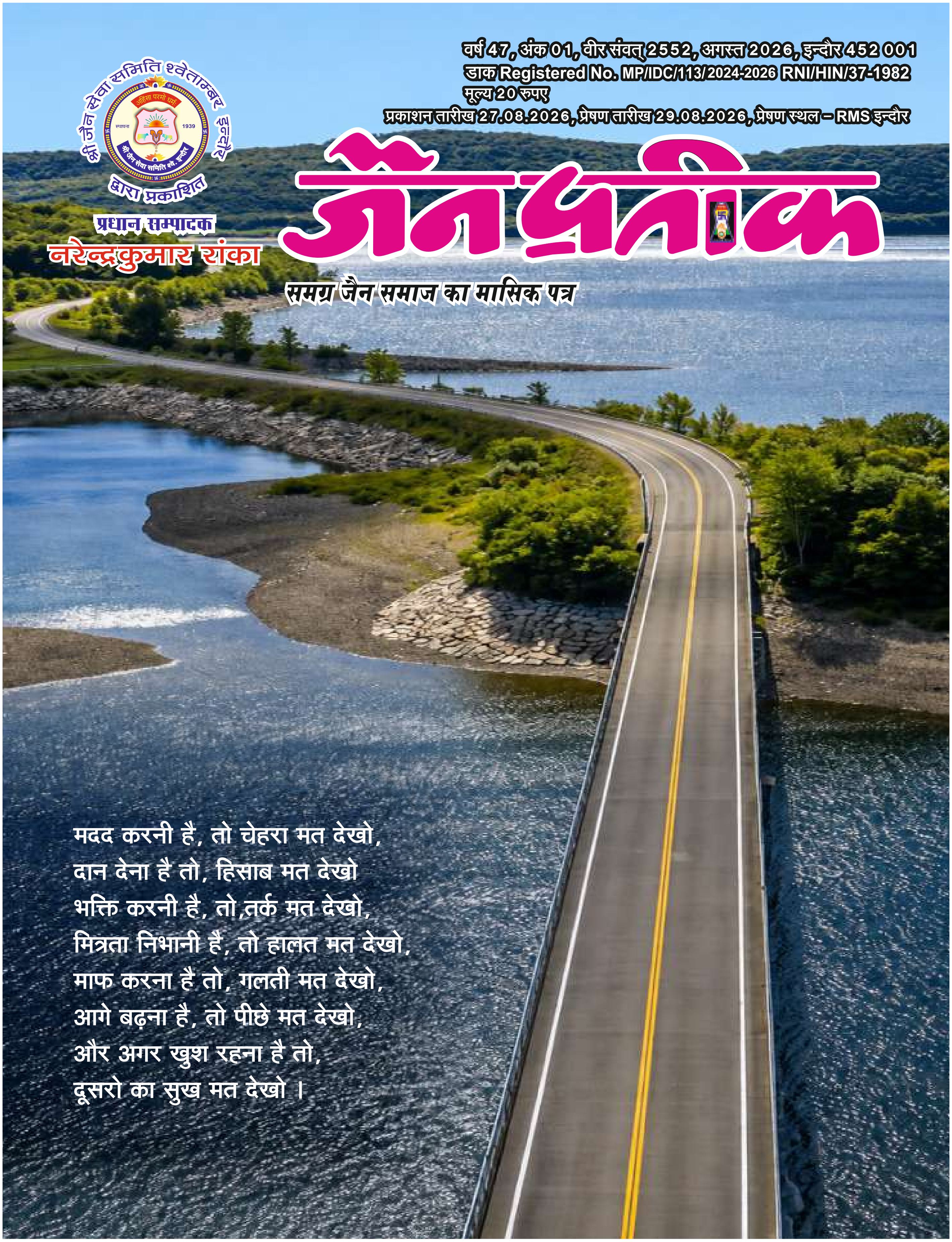

मदद करनी है, तो चेहरा मत देखो,
दान देना है तो, हिसाब मत देखो
भक्ति करनी है, तो,तर्क मत देखो,
मित्रता निभानी है, तो हालत मत देखो,
माफ करना है तो, गलती मत देखो,
आगे बढ़ना है, तो पीछे मत देखो,
और अगर खुश रहना है तो,
दूसरो का सुख मत देखो ।

प्रतिदिन मालवा के प्रसिद्ध
लड्डू
बाफला
Mob : 88787-93939
घर पहुंच सेवा
पार्टियों के ऑर्डर लिए जाते हैं।
होटल
राजहंस
52, बड़ा सराफा, इन्दौर (म.प्र.)
2541671, 2544261, 9009293939

इत्र
।। श्री ।।
सेन्ट
ऋषभ जैन उपकरण भण्डार
श्वेताम्बर व दिगम्बर मंदिरों में लगने वाली समस्त पूजन सामग्री
विशेष : पूजन शोले, चन्दन, वासक्षेप, बरक धूपसली, केसर,
ब्रास, अंगरचना, सामग्री, सामायिक सामग्री
41, इतवारिया बाजार, सब्जीमंडी, मोती महल के पास, इन्दौर
विजय कंकरेचा
मो. 9826359259
(ब्रांच) 2459963
आकाश कंकरेचा
मो. 9826359659
(ऑ) 2430387
सहयोगी प्रतिष्ठान : ऋषभ एण्ड कम्पनी 17, मरोठिया बाजार, इन्दौर

मे. अशोक कुमार एण्ड कम्पनी
सोने एवं चाँदी के फैंसी आभूषण के विक्रेता
शक्कर बाजार, राजरतन काम्पलेक्स (तलघर में), इन्दौर
Mob : 96304-27084, 98268-53400

रोटेरियन
एम.डी. दिलीप सेकेट्री
मो. 9893576550
सचिन सेकेट्री - मो. 9893010003
सर्वेश सेकेट्री - मो. 9893068005
एक्टिव बैट्री प्रोडक्ट एण्ड
लब्धी ट्रेडिंग कम्पनी
समस्त प्रकार के इन्वर्टर, बेट्री, सोलर व मूनलाइट रिचार्जेबल टॉर्च एवं स्पेयर पार्ट्स के विक्रेता
एम.टी.एच. कम्पाउण्ड, मोदी टॉवर, शॉप नं. एम-6,7
आराम होटल के पास, इन्दौर (म.प्र.) 452 001
Email : active09abp@gmail.com

विश्वास के 38 वर्ष
NR
N R Kitchenware Pvt. Ltd.
इंदौर शहर का एकमात्र मल्टी ब्रांड शोरूम & डिस्ट्रीब्यूटर
कुकर, मिक्सर, गैस स्टोव, कुकवेयर, क्राकरी, चिमनी, बाटी ओवन, क्लॉथ स्टैंड, लैडर,
बॉटल, फ्लास्क, टिफ़िन मिलने का विश्वसनीय स्थान
शोरूम: 23, राम लक्ष्मण बाज़ार (M):9752341291
50, पागनिस पागा, पानी की टंकी के सामने (M):9111161291, इन्दौर (म.प्र)

रोहित केमिस्ट
रोहन केमिस्ट
साल्ट
दि लिटिल क्लोसेट
विजय मेहता-91314 51505

मे. विमलचंद धाकड़
।। मंगलम् ।।
दोहरें ✻ टेपेस्ट्री ✻ टॉवेल्स ✻ ब्लेंकेट्स ✻ बेड शीट्स ✻ सेंचुरी कॉटन
✻ कर्टन क्लॉथ ✻ सोफा सीट बेक ✻ एक्सपोर्ट सरप्लस
✻ पिलो-कुशन कव्हर्स ✻ होटल, हॉस्पिटल ✻ बुटिक, टेंट सप्लाय
महावीर धाकड़
गिफ्ट / प्रभावना हेतु
अनेक आयटम उपलब्ध
58, एम.टी. क्लॉथ मार्केट, इन्दौर - फोन : 94253-21253

HIMANSHU JAIN
PIYUSH JAIN
Royal Auto
Deals in Genuine Car
Air Conditioning Spare Parts
Aluminium, Radiators
Fan Assemblies, Intercooler
Mirrors, Gear Cable
B-14, Alankar Point, Geeta Bhawan Square, A.B. Road, Indore 01
Ph. : 0731-7966681 I Mob. : 99935-67870, 90392-13234
E-mail : himanshu.royalauto@gmail.com

OSIYA
FURNISHING
Mahaveer Jain : 9424038727
Mihir Jain : 9777777356
LIVE COMFORTABLY, LIVE BEAUTIFULLY
A COMPLETE RANGE OF FURNISHING SOLUTIONS FOR YOUR HOME
CURTAINS
CUSHIONS
BEDSHEETS
BLANKETS
SOFA COVERS
WALLPAPERS
MATS & CARPETS
Decorate Your Space With Elegance
149, Dravid Nagar, Ranjit Hanuman Road,
Nakoda Palace, Indore (M.P.)
BETTER DESIGN, BETTER LIVING

Anil Tater
9425054390
Sunil Tater
9425314993
Sunil Dry Fruits
The Dry Fruit People
6, Jawahar Marg, Ug-5, Gupta Chamber, Siyaganj, Indore
(O) 2362558, 2365458 (R) 2400611

# जैन प्रतीक

info.jainprateek@gmail.com
www.jainprateek.net
प्रकाशक
श्री जैन सेवा समिति श्वेताम्बर, इन्दौर

**जैन प्रतीक सदस्यता**
**2026 से 2030**
**नवीनीकरण 600/-**

प्रधान सम्पादक
**• नरेन्द्रकुमार रांका**
101, बोथरा इन्कलेव, अभय प्रशाल के सामने, आरसीएम टावर के सामने इंदौर मो. : 9926440311

प्रबंध सम्पादक
**• दिलीप जैन (सेकेट्री)**
बैंक में रूपये भरकर सदस्यता हेतु सम्पर्क करें 16/1, साऊथ तुकोगंज सृष्टि होस्टल के सामने, इन्द्रप्रस्थ टॉवर के पीछे,
मो. : 98935-76550

सह-सम्पादक
**• नरेन्द्रसिंह बापना**
मो. : 94253-48699

**• महेश गोलेछा**
मो. : 94252-34336
**• प्रदीप चौरड़िया**
(ई पेपर हेतु)
मो. : 9893333380
**• कैलाशचन्द जिन्दानी**
मो.: 94248-03033
**• विशाल डागरिया**
मो.: 98933 01040

समाचार-लेख आदि माह की 3 तारीख के पहले प्रधान संपादक को भेजें।

लेखक के विचार से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

प्रकाशन संबंधी विवाद का न्याय क्षेत्र इन्दौर है।


## श्री जैन सेवा समिति श्वे. इंदौर द्वारा बाल प्रतिभा सम्मान समारोह

श्री जैन सेवा समिति श्वे.इन्दौर द्वारा आयोजित बाल प्रतिभा सम्मान समारोह वर्ष 2026 की परीक्षाओं में कक्षा 3 से 7 तक 90 प्रतिशत इसके समकक्ष (A+, A-1) या अधिक अंक कक्षा 8 से 12 तक 85 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करने वाले जैन विद्यार्थियों को सम्मानित कर पुरस्कृत किया जावेगा।

आवेदन पत्र समिति कार्यालय 52, भगवान महावीर मार्ग (उपाश्रय) से **31 अगस्त से 21 सितम्बर 2026 तक रात्रि 7 से 9 बजे तक** प्राप्त कर जमा कर सकेंगे।

**लाभार्थी पारस जी धनपाल जी डोसी, इन्डोथाई सिक्युरिटीज लिमिटेड**

### आवेदन प्राप्ति स्थल

- **ओशिया फर्निशींग** : 149, द्रविड़ नगर, रणजीत हनुमान रोड़, इन्दौर
- **अरिहंत कलेक्शन** : 203, कालानी नगर , सब्जी मण्डी रोड़, इन्दौर
- **अनन्त मेडिकोज** : सीएम-4 सुखलिया, हीरा नगर, पुलिस थाने के सामने, इन्दौर
- **प्रितेन्द्र मेहता** : 1, कृषि विहार कालोनी, तिलक नगर के पास, इन्दौर
- **प्रदीप चौरड़िया** : 302, गोल्ड हेरिटेज, 23/3, वाय.एन.रोड़, इन्दौर
- **फार्म प्राप्ति समय** : सायं 4.00 से रात्रि 8.00 बजे तक

**आवेदन फार्म सिर्फ समिति कार्यालय 52,भगवान महावीर मार्ग, इन्दौर पर ही जमा होंगे।**

| अध्यक्ष | सचिव | कार्यक्रम संयोजक |
|---|---|---|
| **विमल नाहर** | **नरेन्द्र डांगी** | **प्रितेन्द्र मेहता** |
| 9827029436 | 94253 15821 | 9302101312 |

## जैन प्रतीक सदस्यता नवीनीकरण

- सभी की सदस्यता जुलाई 2025 अंक के साथ समाप्त हो गई है।
- इस अंक से 600 रु. में सदस्यता 2026 से 2030 तक रहेगी।
- आजीवन सदस्य किसी को नही बनाया गया है।

A/c- जैन प्रतीक- Bank of India
R.N.T. Marg Indore
Acc. No 880510100011417
IFSC Code - BKID0008807
मे ट्रांसफर करें या →

Bank of India
JAIN PRATEEK
SCAN & PAY
boim-880565501417@boi

शिकायत हेतु- जैन प्रतीक के प्रत्येक अंक पर पीछे एड्रेस के साथ सदस्यता नंबर लिखा रहता है। उसका फोटो खींचकर दिलीप सेक्रेटरी मो. 9893576550 को वाट्सअप करे। कोई माह पेपर नही मिलता है तो ई-पेपर हेतु प्रदीप चौरड़िया (मो. 9893333380) से बात करें।तीन माह में एक बार कोरियर द्वारा भेजी जावेगी। हर बार शिकायत के साथ सदस्यता न. एवं एड्रेस भेजना जरुरी है।

**जैन प्रतीक बार कोड द्वारा सदस्यता शुल्क जमा कर श्री दिलीप सेकेट्री को मो. 98935-76550 पर (वाट्सएप करे) सूचित करें।**

## एजुकेशन लोन बिना ब्याज के

समिति द्वारा जैन समाज के आर्थिक रुप से कमजोर, मेधावी छात्रों को प्रोफेशनल, ग्रेजुएशन एवं पोस्ट ग्रेजुएशन हेतु एजुकेशन लोन। केवल इन्दौरवासियों के लिए है।

| अध्यक्ष | सचिव | संयोजक |
|---|---|---|
| **विमल नाहर** | **नरेन्द्र डांगी** | **वीरेन्द्र नागदा** |
| 9827029436 | 94253 15821 | 9424404142 |

## बाल प्रतिभा एवं ज्ञानोतरी सम्मान समारोह

**दिनांक : 04 अक्टूबर 2026 रविवार**
**समय :** दोपहर 1.30 बजे
**स्थानः** महावीर बाग, एरोड्रम रोड़ इन्दौर
**लाभार्थी :** बाल प्रतिभा सम्मान श्री पारसजी धनपाल डोसी एवं परिवार
**ज्ञानोत्तरी प्रायोजक :**
श्री मनोहरलाल जी मोहनदेवी जी जैन (सेमलिया तीर्थ)

**ज्ञानोतरी के उत्तर भेजने की तारीख बढ़ाकर 20-9-2026 कर दी गई है।**

## संपादकीय

# भौतिकता की चकाचौंध में धर्म नही, धर्म तो त्याग, तप और आत्मसाधना में है ।

भगवान महावीर स्वामी ने जो धर्म बताया, वह प्रदर्शन का नही, बल्कि संयम, त्याग, तप, दया सामायिक, स्वाध्याय और आत्मकल्याण का मार्ग है । आगमों मे वर्णित साधु जीवन का आधार सादगी, अपरिग्रह और पंच महाव्रती की कठोर साधना है ।

हमारे प्राचीन आचार्यो और साधु-संतो ने बिना माइक, मोबाइल, विद्युत सुविधाओ और आधुनिक भौतिक साधनों के बिना कठिन विहार किये । सादगीपूर्ण जीवन जिया, प्राकृतिक व्यवस्था में ही अपनी दैनिक आवश्यकताओं का निर्वाह किया और प्रत्येक क्षण आत्मशुद्धि का पुरुषार्थ किया । उनका लक्ष्य केवल एक था-कर्मनिर्जरा और मोक्षमार्ग ।

उस समय चातुर्मास श्रद्धा, स्वाध्याय, तप और साधना का पर्व होता था । उसमें अनावश्यक दिखावा, वैभव और भारी खर्च का स्थान नही था । श्रद्धालु अपनी शक्ति के अनुसार सेवा करते थे और धर्म का केंद्र आत्मपरिवर्तन होता था, न कि बाहरी आयोजन ।

आज हमें स्वयं से एक प्रश्न पूछना चाहिए- क्या धर्म का मूल्य उसकी भव्यता से तय होगा या साधना की गहराई से ? यदि धार्मिक आयोजन केवल वैभव, प्रसिद्धि और प्रतिस्पर्धा का माध्यम बन जाएँ, तो कही न कही धर्म के मूल उद्देश्य से दूर होने लगते है ।

धर्म वहाँ है जहाँ अहिंसा है,त्याग है, तप है, संयम है, विनम्रता है और आत्मचिंतन है ।

धर्म वहाँ नही, जहाँ केवल भीड़,भव्यता और भौतिक प्रदर्शन हो ।

इस दुनिया में कोई परिपूर्ण नहीं है ।

## ''बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय''

''इस दुनिया में कोई भी शुद्ध और परिपूर्ण नहीं है । अगर आप लोगों को उनकी गलतियों के कारण नजरअंदाज करेंगे, तो आप इस दुनिया में अकेले रह जाएंगे । इसलिये आलोचना कम करे और प्यार ज्यादा करें ।''

''बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय''

जो खुद देखा आपको, मुझसे बुरा न कोय ।'' जमाने भर में गलतियो-बुराइयों-दोषो को निकालने की हीन प्रवृत्ति को त्यागते हुए, चार दिन के इस जीवन में सबसे प्यार करते जीवन जिएं हम सभी ।

## धर्म का रैंप शो : चातुर्मास में साधना या ग्लैमर ?

**अक्षय जैन (नाकोड़ा )मारु**

कभी चातुर्मास का अर्थ था संयम, स्वाध्याय, तप,मौन और आत्मचिंतन । आज कई स्थानो पर लगता है कि इसकी नई परिभाषा बन गई है भव्य मंच, आकर्षक सजावट, हाई-डेफिनेशन कैमरे, लाइव प्रसारण, बड़े-बड़े होर्डिंग, समाचारों की सुर्खियाँ और सोशल मीडिया की रीलें ।

स्थिति यह नही कि केवल किसी एक परंपरा में परिवर्तन आया हो । स्थानक वासी हो, मंदिरमार्गीय हो या दिगंबर लगता है कि ग्लैमर की चमक ने लगभग हर संप्रदाय के द्वार पर दस्तक दे दी है । अंतर केवल शैली का है, प्रवृत्ति लगभग एक जैसी दिखाई देती है ।

अब प्रश्न यह नहीं रहता कि किसने कितना तप किया, बल्कि चर्चा यह होने लगती है किसका मंच कितना विशाल था, किसका स्वागत कितना भव्य हुआ, कितना धन संग्रह कितनी बड़ी बोलियाँ ली गई और किसके कार्यक्रम की कितनी कवरेज मिली और किसकी तस्वीर अगले दिन अखबारो में प्रकाशित हुई ।

ऐसा लगता है मानो धर्म का मूल्यांकन साधना से नहीं, बल्कि प्रचार-प्रसार के पैमाने से होने लगा हो । विनय पीछे छूट रही है और दृश्यता आगे निकलती जा रही है ।

चिंतन तो यह है कि भगवान महावीर ने अपरिग्रह का संदेश दिया था, ओर हम कभी-कभी 'प्रसिद्धि परिग्रह' का संग्रह करने में अधिक व्यस्त दिखते है । उन्होने अंहकार छोड़ने को कहा था, लेकिन कही-कही अंहकार का नया रूप ''धार्मिक ब्रांडिग'' बनकर सामने आ जाता है ।

यह लेख किसी साधु,साध्वी, श्रावक या किसी एक संप्रदाय की आलोचना नहीं है । हर परंपरा में अनेक ऐसे संत और श्रद्धालु है जो आज भी सादगी, तप और संयम का आदर्श प्रस्तुत कर रहे है । प्रश्न उन प्रवृत्तियो का है जो धर्म को धीरे-धीरे आयोजन, प्रतिस्पर्धा और प्रदर्शन में बदल देती है ।

आत्ममंथन का समय है । यदि चातुर्मास आत्मा को भीतर ले जाने के बजाय कैमरो की ओर मोड़ दे, यदि तप से अधिक चर्चा तामझाम की हो, यदि धर्म से अधिक महत्व प्रसिद्धि को मिलने लगे, तो रूककर स्वयं से पूछना चाहिये,

क्या हम भगवान महावीर के बताए मार्ग पर चल रहे है या फिर धर्म को भी बाजार और ब्रांडिंग की भाषा में ढाल रहे हैं ?

क्योंकि धर्म की ऊँचाई मंच की ऊँचाई से नही मापी जाती । वह साधना की गहराई, विनम्रता, करुणा और आत्मसंयम से पहचानी जाती है । यदि यह सत्य स्मरण रहे, तो चातुर्मास फिर से आत्मकल्याण का पर्व बन सकता है सिर्फ आकर्षण का आयोजन नही ।

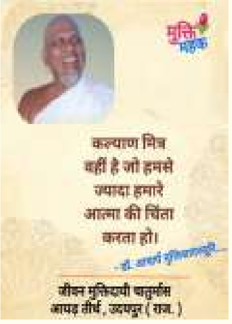


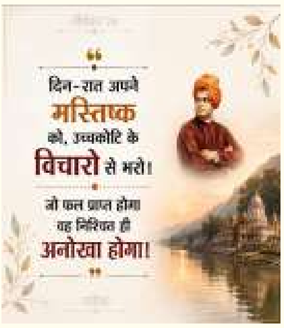

## भारत में जन्म लेना सौभाग्य, यहां धन से ज्यादा शांति है

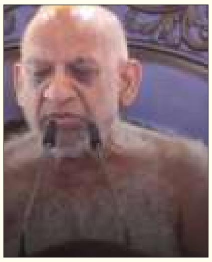

इन्दौर। दलालबाग में चल रहे चातुर्मास के दौरान मंगलवार को धर्मसभा में श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा भारत में जन्म लेना गर्व की बात है क्योंकि यहां धन से अधिक शांति का महत्व है। जिस देश में व्यक्ति सुकून से सो सके, वही वास्तव में श्रेष्ठ शिक्षा है। अमेरिका में संपन्नता हो सकती है लेकिन भारत जैसी मानसिक शांति नही है। इसलिये हर व्यक्ति को यह भाव रखना चाहिए कि उसका हर जन्म भारत में ही हो।

## पार्श्वनाथ तीर्थ के 42 साल के संघर्ष की गाथा सुन भावुक हुए श्रद्धालु

त्रिस्तुतिक जैन श्वेतांबर श्रीसंघ के तत्वावधान में आयोजित धर्मसभा में महाराष्ट्र के सिरपुर स्थित अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ की गौरवगाथा और 42 वर्षो तक चले संघर्ष का प्रस्तुतीकरण किया गया। सूरत के निमेश भाई सावणी व चिराग श्रीमाल ने तीर्थ के इतिहास और संघर्ष पर आधारित प्रस्तुति दी। महाराज श्री ने कहा तीर्थ केवल आस्था नही, बल्कि धर्म और इतिहास की अमूल्य धरोहर है। सभा में बताया गया कि 1981 में बंद हुआ अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ 2023 में पुन श्रद्धालुओं के लिये खुला।

## इंदौर नगरी में हुई एक कमरे में चातुर्मास कलश स्थापना

इंदौर में परम् पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी मुनिराज के शिष्य तपस्वी संत परम पूज्य मुनि श्री सिद्धान्त सागर जी मुनिराज का वर्षायोग 2026 का मंगल कलश स्थापना का आयोजन बहुत सादगी पूर्वक बिना कोई बैनर, पोस्टर, पांडाल बोली, मंच, माला, माइक कुछ नही, केवल एक कमरे में कुछ मुनि भक्तों के बीच गोमट गिरी के सामने आकाश ग्रीन कॉलोनी में चातुर्मास पुण्य स्थल श्री मनोज जी मोदी के निजनिवास पर संपन्न हुआ।

## समय और समझ का साथ मिल जाए तो जीवन सफल

चातुर्मास प्रवचन ने आचार्य श्री 108 सुनीलसागर जी महाराज ने कहा, जीवन अंतर्देशीय पत्र की तरह तीन मोड़ो बचपन, युवावस्था और बुढ़ापे से गुजरता है। समय और समझ का सदुपयोग कर अध्यात्म का मार्ग अपनाएं तो जीवन सफल हो जाएगा।

## चिंतन और मैत्री भाव से जीवन को मिलती है नई दिशा : साध्वी मंजुलाश्रीजी

## सच्चा मित्र वही, जो जीवन को सही दिशा दें - आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

## अज्ञान ही जन्म-मरण के चक्र का सबसे बड़ा कारण - मुनि श्री संवेगरत्न सागर म.सा.

रायपुर। विवेकानंद नगर में मुनि श्री संवेग रत्न सागर जी म.सा. ने कहा कि संसार में जीव के अनादिकाल से भटकने का सबसे बडा कारण अज्ञान है। जब तक मनुष्य जिनवाणी से सही ज्ञान प्राप्त कर यह नहीं समझेगा कि उसे किस दिशा में आगे बढ़ना है तब तक मोक्ष का मार्ग कठिन बना रहेगा।

## आत्मचिंतन से ही हमारे मोक्ष का मार्ग खुलता है

इन्दौर।केशरी वाटिका में चल रही चातुर्मास प्रवचनमाला में आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वर जी ने कहा जीव अनादिकाल से संसार में भटक रहा है। सिद्ध रत्न विजय जी ने जमीकंद में अनेक जीवो का उदाहरण देकर अहिंसा और संयम का महत्व बताया।

## किसी भी जीव को दुख न पहुंचाना ही वास्तविक अहिंसा है

इंदौर। नृसिंह वाटिका, एरोड्रम रोड पर चातुर्मास हेतु विराजित अनुष्ठान आराधिका महासती कुमुदलताजी नें कहा।

**चार वेदो का अर्थ ना जानो तो कोई बात नही। परन्तु समझदारी, जवाबदारी, वफादारी और ईमानदारी ये चार शब्दों का मर्म जानो तो भी जीवन सार्थक हो जायें।**

## आचार्य विज्ञानप्रभ सूरि महाराज का रेसकोर्स रोड़ उपाश्रय में हुआ प्रवेश

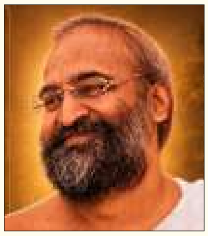

इंदौर । आचार्य श्री विज्ञानप्रभ सूरि जी महाराज का साधु-साध्वियों के साथ रेसकोर्स रोड़ उपाश्रय श्रीसंघ में मंगलप्रवेश हुआ । चांदी के अक्षत और चांदी की गिन्नियों से पूजन किया गया । इसमें कमल, गुलाब, चमेली के फूलों और चंदन, केसर और दुर्लभ औषधियों का विशेष सहयोग हुआ ।

## 14 पूर्वधर तप

इन्दौर रेसकोर्स रोड़ 14 पूर्वधर तप के 54 तपस्वीयों को गच्छाधिपति श्री विज्ञानप्रभ श्री जी की निश्रा में कुंभकलश की स्थापना की गई तथा आराधकों को आराधना कराई गई ।

इंदौर । सम्यक दर्शन, ज्ञान और चरित्र के मार्ग पर चलना है तो अपने जीवन की गाड़ी की गति को नियंत्रण में रखना होगा । प्रत्येक जीव मोक्ष प्राप्त करना चाहता है । निंदक के साथ रहने से हम अपने कर्मों के प्रति सजग बने रहते है । मंदिर जाने का नियम अवश्य बनाएँ । मन में हमेशा यह भाव रखना कि मैं उस देश में जन्म लूं जहां मुझे सत्कर्म करने की लिये सीधे अवसर प्राप्त हो । यह बात मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने दलालबाग सत्संग मंडल में कही ।

एक चौमासा ऐसा भी श्री विजयवाड़ा जैन संघ में चल रहा पूज्य गुरु भगवंत गुणहंस विजय जी मासा चौमासा, चौमासा प्रारंभ होकर अभी तक एक रुपए का भी खर्चा नही एक रुपए की भी बोली नही हुई है ।

जितनी भी बोलिया हुई है वो सभी आराधना की बोली हुई जिसने ज्यादा नियम लिये उसको चढ़ावा मिला । व्याख्यान दिन में 8 बार चलते है । मुख्य व्याख्यान सुबह 9.15 से आरंभ हो जाते है 9.20 तक लगभग 1200 की संख्या हो जाती है । ठीक 9.20 को व्याख्यान हाल को ताला लगा देते है और कोई भी हो उसके बाद न कोई आ सकता है न कोई जा सकता है ।

## शत्रुंजय महातीर्थ से, दादा आदिनाथ की छत्रछाया से शुरु, गुरुभगवंतो की असीम कृपा से 108 अठाई के भाव लिए

आज वीर बेटी, पत्रिका एडिटर सुमधुर गायिका श्रद्धा मुकेश जी नाहर जोधपुर जिन्होने कई बड़ी तपस्या जैसे 3 उपधऊ, 3 वर्षीतप, मासक्षमण, शत्रुंजय तप, अक्षय निधि, समोसमण, शांति धारा तप, गिरनार की 99 यात्रा में छठ करके सामने से वर्षीतप के चलते 7 यात्रा किये, और अभी इनके 25 वीं अठाई चल रही है । धन्य है ऐसी तपस्वी रत्न को , आपकी तप की साता पूछते है । आपकी माता श्री भी वर्तमान में खरतरगच्छ में स्वर सम्राज्ञी साध्वी श्री क्षमोदया जी महाराज जो अभी इंदौर में विराजमान है जिनके संयम जीवन को भी 25 वर्ष पूर्ण हूए । खूब खूब अनुमोदना ।

## श्री जैन सेवा समिति द्वारा संचालित गतिविधियाँ

स्वधर्मी जरुरतमंद परिवारों को गेहूँ, चावल, दाल, तेल, मिठाई आदि वितरण, पुस्तक कोष योजना-मेधावी छात्र-छात्रा सम्मान, कार्यक्रम जैन प्रतीक (प्रकाशन), प्रतिदिन भोजन पैकेट वितरण योजना ,साधु-साध्वी-वैयावच्च-कैंसर, किडनी, हार्ट सर्जरी, सहायता-छात्रवृत्ति-एज्युकेशन लोन ।

## जीवन को संतुलित बनाने की कला सिखाता है धर्म

इंदौर । व्यक्ति हर परिस्थिति में प्रसन्न रहने की कला सीख ले, समता का भाव अपनाए और धर्म के मार्ग पर चलता रहे, तो सुभव कुमार सहित सुखविपाक सूत्र में वर्णित दसो राजकुमारों के समान सुख, शांति और समृद्धि उसके जीवन में भी अवश्य प्राप्त हो सकती है । धर्म मनुष्य का केवल पूजा-पाठ नही, बल्कि जीवन को संतुलित और आनंदमय बनाने की कला भी सिखाता है । यह बात महासती डा.कुमुदलता महाराज ने एयरपोर्ट रोड़ स्थित नृसिंह वाटिका में कही । वे चातुर्मासिक प्रवचनमाला में बोल रहे थे ।

## जैसा देखेंगे, वैसा बनने की इच्छा होगी, इसलिये मंदिर जाएं

इंदौर । मंदिर इसलिये जाना, क्योंकि वहां स्थापना रूप में प्रभु प्रतिमा होगी । दर्शन करेंगे तो जैसा देखेंगे वैसा बनने की इच्छा होगी । यह बात साध्वी दमिताश्रीजी की शिष्या साध्वी शिवम् प्रियाजी ने बुधवार को गुमाश्ता नगर स्थित नाकोड़ा जैन मंदिर में कही । संस्थापक अध्यक्ष भूपेंद्र जैन व ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष सुरेंद्र छाजेड़ ने बताया कि प्रतिदिन चातुर्मासिक प्रवचनमाला हो रही है ।

## महावीर बाग में भव्य प्रवेश

इन्दौर । श्री महावीर बाग में महतरा विभूषिता पद श्री मनोहर श्रीजी म.सा. की सुशिष्या गच्छ गणिनी श्री सुभद्रा श्रीजी एवं शुभंकरा श्रीजी म.सा. का भव्य प्रवेश हुआ । प्रवचन देते हुए । प.पू. श्री सुभद्रा श्रीजी म.सा. ।

## भायंदर में भव्य प्रवेश

मुम्बई । जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वर जी महाराज के शिष्य मुनिराज श्री निपुणरत्नविजय जी महाराज आदि ठाणा का 26 जुलाई महाराष्ट्र के भायंदर में हुए चातुर्मास प्रवेश की झलकियाँ । 80 जापानी श्रद्धालु जापान से पधारे ।

कांबली बोहराने एवं गुरु पूजन का लाभ तुलसी बहन के जापानी संघ ने लिया । जापान में चातुर्मास की विनती की ।

## दीक्षा के 25 वर्ष पूर्ण

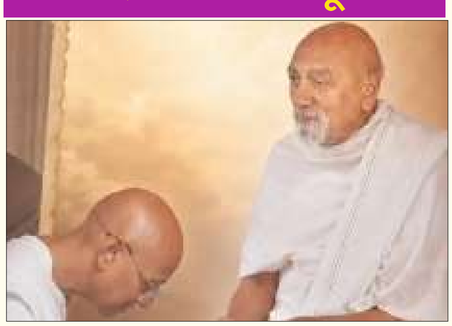

उपाध्याय प्रवर श्री मनीष सागर जी दीक्षा के 25 वर्ष पूर्ण होने पर शुभेच्छा एवं बधाई ।

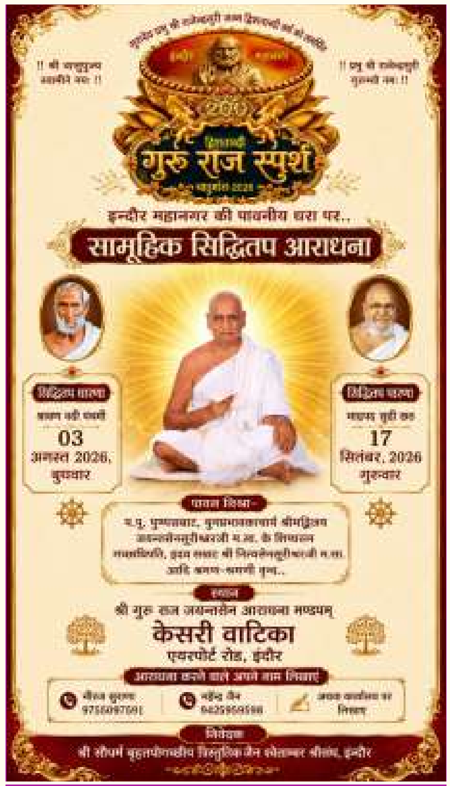


## गरीबों के मसीहा डॉ.विजय कुमार कोचर का नाम स्वर्णिम बुक ऑफ रिकार्ड्स में दर्ज

इंदौर । चिकित्सा सेवा को मानवता की सेवा का सर्वोच्च माध्यम बनाने वाले वरिष्ठ चिकित्सक एवं गरीबों के मसीहा के रुप में विख्यात डॉ. विजय कुमार कोचर को उनकी दशको से चली आ रही निःस्वार्थ जनसेवा के लिये ।

स्वर्णिम बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट ऑफ रिकॉग्निशन) से बास्केटबॉल स्टेडियम सम्मानित में किया गया ।

## आज का सुविचार

जीवन में परेशानियाँ चाहे जितनी भी हो चिन्ता करने से और बड़ी हो जाती है, खामोश होने से काफी कम हो जाती है । सब्र करने से खत्म हो जाती है और परमात्मा का शुक्र करने से खुशियों में बदल जाती है ।

एक समय था जब किसी को स्टेशन तक छोड़ने जाते थे तो आँखे नम हो जाती थी, और अब श्मशान में भी लोगों की आँखे कोरी रह जाती है ।

जन्म और मृत्यु भी अब महंगे हो गए है, सिजेरियन के बिना कोई आता नहीं है वेंटिलेटर के बिना कोई जाता नहीं ।

## विनम्रता ही मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण

इंदौर। केशरी वाटिका में चल रहे द्वि-शताब्दी गुरु स्पर्श चातुर्मास में शनिवार से भगवान महावीर की देशना पर आधारित उत्तराध्ययन सूत्र में 36 अध्यायों की व्याख्या शुरु हुई। इस मौके पर बडी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे श्री विजय नित्यसेनसूरीश्वर जी महाराज ने कहा कि विनम्रता के बिना जीवन अधूरा और अज्ञान ही व्यक्ति को धर्म से दूर करता है। कर्मो का फल हर व्यक्ति को भोगना पड़ता है।इसलिये समय रहते आत्मचिंतन जरुरी है। श्री सिद्धरत्न विजय महाराज ने कहा कि राग, द्वेष और अहंकार से मुक्त होकर ही आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। आयोजन में चल प्रतिष्ठा महोत्सव, महापूजा, नवकारसी के कार्यक्रम हुए।

## शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट दान से हमारे भविष्य की पीढ़ी तैयार होगी... साध्वी श्री कुमुदलताजी

इन्दौर।समाज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र के उत्कृष्ट दान की परंपरा है और इस राशि से श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त कर हमारे भविष्य की पीढ़ी तैयार होती है। महासंघ इस कार्य के लिये बधाई का पात्र है। उक्त विचार श्वेतांबर जैन महासंघ न्यास के द्वारा जैन दिवाकर दरबार नरसिंह वाटिका पर आयोजित विद्यार्थियो के स्कॉलरशिप वितरण समारोह में अनुष्ठान आराधिका कुमुदलता जी म.सा. ने व्यक्त किये।

## जैन प्रतीक मासिक पत्रिका का विमोचन

इन्दौर। जैन प्रतीक मासिक पत्रिका के जुलाई अंक का विमोचन आचार्य श्री नित्यसेन सूरीश्वर जी श्री निश्रा में केसरी वाटिका में श्री सोहनलाल जी पारिख एवं श्री शशीकान्त जी सकलेचा तथा नृसिंह वाटिका में साध्वीजी श्री कुमुदलता जी म.सा. की निश्रा में श्री डेविस जी जैन एव श्री रमेश जी भंडारी ने किया। प्रधान संपादक नरेन्द्र कुमार रांका, प्रबन्ध सम्पादक दिलीप सेकेट्री, नरेन्द्र बापना, विमल नाहर, कैलाश जिन्दानी, नरेश मेहता आदि संपादक मंडल के सदस्यों सहित युवा रमेश जैन, श्री प्रकाश भटेवरा, श्री अशोक मंडलिक, श्री हेमन्त बोहरा आदि उपस्थित थे।

## दादागुरु की पूजन

श्री कुशल भक्ति मंडल दादावाड़ी इन्दौर भक्ति के 3 वर्ष होने पर दादागुरु की पूजा पढ़ाई गई।

## साम्रगी भेंट

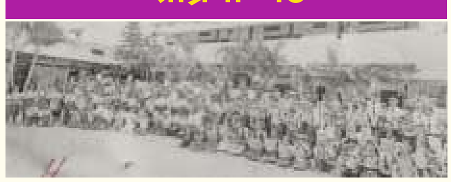

केशरदेवी पब्लिक स्कूल, चोरल डेम के छात्रों द्वारा हर रोज प्रातः प्रार्थना में, नवकार महामंत्र का पाठ किया जाता है। सिनियर सिटीजन ग्रुप एवं जैन समाज ने इस स्कूल को गोद लेकर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा रही है।

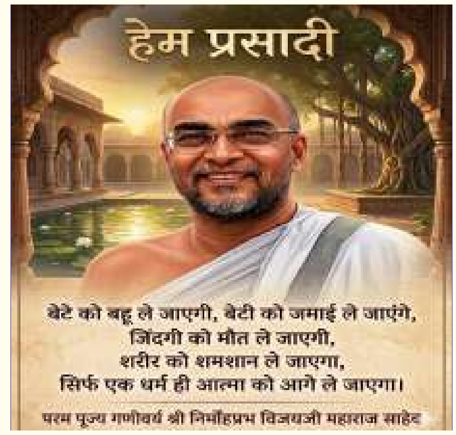

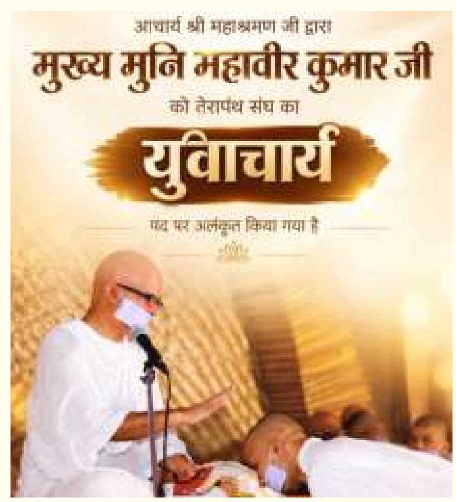

## स्वधर्मी स्वावलंबी योजना का शुभारंभ

इन्दौर । जैन श्वेतांबर सोशल ग्रुप्स फेडरेशन की नवनिर्वाचित राष्ट्रीय कार्यकारिणी का भव्य एवं शपथ ग्रहण समारोह स्थानीय दस्तूर गार्डन में गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया । अतिथि अग्निबाण के प्रबंध संपादक राजेश चेलावत, स्वप्निल कोठारी एवं राष्ट्रकवि शशिकांत यादव ने प्रेरणादायक उद्बोधन में संगठन की एकता, सहयोग एवं सेवा भावना को मजबूत करने के साथ स्वधर्मी स्वावलंबी योजना को व्यापक स्तर पर सशक्त बनाने का संदेश दिया । संस्थापक अध्यक्ष विजय पुष्पा मेहता ने आर्शीवाचन दिए । राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष मामा लता जैन को पद एवं दायित्व की शपथ दिलाई । राष्ट्रीय अध्यक्ष शिखरचंद जी बाफना, किशोर पोरवाल ने विभिन्न कमेटियों के चेयरमैन को शपथ दिलाई । निवर्तमान अध्यक्ष संजय श्वेता छाजेड़, विजय ललवानी ने नवनियुक्त कार्यकारिणी को शुभकामनाएं एवं बधाई दी । प्रतापसिंह मेहता की ओर से समाज की दो जरुरतमंद विधवा बहनों को दो सिलाई मशीने प्रदान कर योजना का प्रेरक शुभारंभ किया गया । मनीष सुराणा, हंसराज जैन, राजकुमार सुराणा, अनिल मेहता , संजय मोगरा, मुकेश रांका प्रदीप ललवानी, मनोज जैन उपस्थित थे ।

### तीन पिढ़ीयों की एक साथ दीक्षा

राजस्थान के बाट निवासी दिलीप भाई मणिलाल शाह, उनकी धर्मपत्नी, उनका बेटा, उनके बेटे की धर्मपत्नी,उनके बेटे का बेटा, उनके बेटे की बेटी ये तीन पीढ़िया एक ही दिन एक साथ दीक्षा ले रही है । इस श्रावण सुद तीर्थ के दिन मुंबई में दीक्षा मूर्ति चढ़ाई जाएगी । श्री सोम सुंदर सूरी सोमबापू की निश्रा में शासन में पहली बार तीन पीढ़ियाँ एक साथ दीक्षा ले रही है , एक ही मंडप में, एक ही दिन, पालीताणा तीर्थ में दीक्षा होकी । लोग कहते है, की संसार पैसो से चलता है, यहां मोह-माया चलती । लेकिन एक पूरा परिवार जो अपनी संपूर्ण संपति छोड़कर मोहमाया त्याग करने जा रहा है ।

## तैराकी में नेशनल चैंपियन

इंदौर की हारमनी जैन तैराकी मे बनी नेशनल चैंपियन । इंदौर का नाम किया रोशन, तैराकी में हारमनी जैन बनी नेशनल चैंपियन ।

**गलत लोग गलत कर के भी नहीं शरमाते और सही लोग इल्जाम से ही टूट जाते हैं ।**

## विचक्षण जैन विद्यापीठ, कुम्हारी में देशभक्ति के उल्लास के साथ मनाया गया 80वॉं स्वतंत्रता दिवस।

## मदद सम्मान देने से भी होती है

उस दिन मुझे समझ में आया कि मदद केवल देने से नही, सम्मान देने से भी होती है । एक दिन मैने अपनी मां को पड़ोस के घर से नमक मांगते हुए सुना । मुझे थोड़ी हैरानी हूई, क्योंकि हमारे घर मे तो नमक मौजूद था .

जिज्ञासा वश मैने मां से पूछ ही लिया,"मां जब घर मे नमक है तो आपने पड़ोसियोंम से क्यों मांगा ?

मां ने मेरी ओर देखा और हल्कीसी मुस्कान के साथ बोली-बेटा, हमारे पड़ोसी आर्थिक रुप से बहुत सक्षम नही है । वो अक्सर हमसे छोटी-छोटी जरुरतों के लिये मदद मांगते रहते है । कभी-कभी मैं जानबूझकर उनसे कुछ मामूली चीज मांग लेती हूँ, ताकि उन्हें यह महसूस हो कि हम भी अपनी अचानक आई जरूरतों के लिये उन पर निर्भर हो सकते हैं ।

मां थोड़ी देर रूकी और फिर आगे बोली, 'इससे उनके मन में संकोच नही रहता । उन्हें यहीह लगता कि वे केवल लेने वाले है । और जब भी उन्हें जरूरत पड़ती है, वे बिना झिझक हमारे पास आ सकते है ।'

बात छोटी सी थी, लेकिन उसमें छुपी सीख बड़ी थी ।

**वक्त बदल गया है साहब, अब लोग रिश्ते नहीं,हिसाब पूछते हैं और बड़ी आसानी से कह देते हैं आपने मेरे लिए किया ही क्या है।**

## मोबाइल की दुनिया में सिमटते पारिवारिक रिश्ते

नन्हे मुन्ने बच्चों से लेकर बुजुर्गो की भी आवश्यकता बन चुका है मोबाइल।

आज के युग में तकनीक ने मानव जीवन को अभूतपूर्व गति दी है । आज एक क्लिक पर दुनिया की जानकारी उपलब्ध है । दूर बैठे लोगों से पलभर में बातचीत हो जाती है अर अनेक काम-मोबाईल फोन के माध्यम से पूरे हो जाते है। लेकिन इसी तकनीकी सुविधा ने धीरे-धीरे हमारे पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों पर भी गहरा प्रभाव डाला है । सबसे बड़ी चिंता यह है कि संवाद बढ़ने के बजाय घटता जा रहा है ।

आज अधिकांश परिवारों में एक ही छत के नीचे रहने वाले लोग भी अपने-अपने मोबाइल की स्क्रीन में व्यस्त दिखाई देते है . भोजन की मेज पर बातचीत कम और स्क्रीन पर नजरें अधिक होती है । बच्चों के बचपन से लेकर बुजुर्गो के अनुभव तक, सब कुछ डिजिटल शोर में कही दबता जा रहा है । रिश्तों की गर्माहट, आत्मीयता और अपनापन केवल संदेशो और इमोजी तक सीमित नहीं हो सकता ।

मोबाइल स्वयं समस्या नहीं है, बल्कि उसका असंतुलित उपयोग चिंता का विषय है । सोशल मीडिया की आभासी दुनिया कई बार वास्तविक जीवन के संबंधो से अधिक महत्वपूर्ण लगने लगती है । इसका असर बच्चों की पढ़ाई, युवाओं के मानसिक संतुलन, पारिवारिक वातावरण और सामाजिक व्यवहार पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है । बढ़ती चिड़चिड़ाहट, अकेलापन और आपसी दूरी इसी अंसतुलन के संकेत है ।

समय की माँग है कि तकनीक का उपयोग सुविधा के लिये हो, जीवन का विकल्प बनने के लिये नही । परिवारों को प्रतिदिन कुछ समय ऐसा अवश्य निकालना चाहिये जब सभी सदस्य बिना मोबाइल के एक-दूसरे से खुलकर बात करें । माता-पिता बच्चों के साथ समय बिताएँ, उनकी बातें सुनें और उन्हें संस्कारो के साथ संवाद का महत्व भी सिखाएँ । विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं को भी डिजिटल संतुलन के प्रति जागरुकता बढ़ाने की आवश्यकता है। - **चंद्रशेखर वर्मा-राजू**

## वर्षायोग की कलश स्थापना

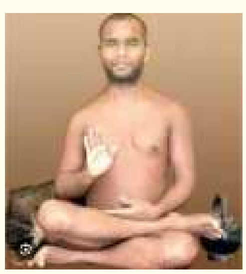

इंदौर । आचार्य श्री सुनील सागर जी म.सा. ने प्रवचन में कहा की केवल समय बीतने से जीवन नहीं बदलता, बल्कि आत्मचिंतन, सद्कर्म और सही दिशा में किया गया प्रयास ही व्यक्ति को आगे बढ़ाता है । हर नया दिन नई उम्मीद लेकर आता है , लेकिन यदि आत्मकल्याण का प्रयास न हो तो वर्ष यूं ही निकल जाते है ।

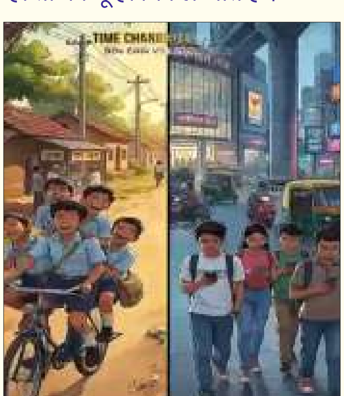

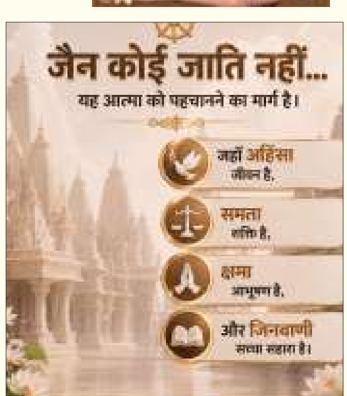


## वर्तमान जैन शासन के वस्तुपाल-तेजपाल

भारत रत्न पद्मभूषण और पद्मश्री जैसे सभी सम्मान भी जिनके नाम के आगे फीके प्रतीत होते है, ऐसे वर्तमान जैन समरुप के दो महान विभूतियां इतिहास का भी गौरव बनेगी । जीवदया के महर्षि कुमारपालभाई वी.शाह और साधार्मिक सौजन्य के शिल्पी कल्पेशभाई वी.शाह मुठ्ठी भर नहीं । बालिश्त भर नही, बल्कि योजनों ऊँचे महामानव है । उनकी समर्पित भावना केवल जैनों या जैन धर्म तक सीमित नहीं है । यह बात सभी जानते है । साधु-संतो की वैयावच्च (सेवा) करना, संपूर्ण मानव समाज का कल्याण करना, भारत की सात्विक संस्कृति को सुदृढ़ एवं संस्कारित करना तथा पशु-पक्षियों की करुणापूर्वक सेवा और संरक्षण करना उनके प्रमुख उद्देश्य है ।

अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय वे सभी जरूरतमंदो तक बिना किसी भेदभाव के तत्काल सहायता पहुँचाते है । श्री वर्धमान सेवा केंद्र के बैनर तले तथा अन्य माध्यमों से वे प्रत्येक वर्ष जाति-धर्म के किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना करोड़ो रुपयों के सेवा कार्य संपन्न करते है ।

गच्छाधिपति आचार्य श्री राजशेखरसूरीश्वर जी महाराजा ने एक बार कहा था-''सामान्यतः विशाल स्तर पर सेवा कार्य करने के लिये आयोजक पहले आर्थिक संसाधन जुटाते है, लेकिन कुमारपालभाई.वी.शाह आवश्यक सेवा कार्य को प्राथमिकता देते हुए पहले उसका आयोजन करते है । उनकी पारदर्शी कार्यशैली और उत्कृष्ट प्रतिभा के कारण आर्थिक सहयोग तो आवश्यकता से भी अधिक अपने आप प्राप्त हो जाता है ।

उदारहृदय जगडूशाह, वस्तुपाल-तेजपाल और भामाशाह की कीर्तिगाथाएँ हमने सुनी है, किंतु उन्हें प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य हमें नही मिला । वर्तमान युग के ये दोनों उदार महापुरुष हमारे बीच विद्यमान है । हम उनके युग में श्वास ले रहे है -यह भी हमारे लिये अत्यंत गौरव का विषय है ।

## गलतियाँ छिपाने से नही, स्वीकारने से बदलता है जीवन-श्री सुधासागर जी मा.सा.

इन्दौर । दलाल बाग में चल रहे चातुर्मास महोत्सव का धर्मसभा में शनिवार को राष्ट्रसंत सुधासागर महाराज ने कहा, गलती करना मनुष्य का स्वभाव है लेकिन उसे स्वीकार नही करना सबसे बड़ी कमजोरी है । व्यक्ति यदि अपनी कमियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारने का प्रयास करे तो उसका जीवन बदल सकता है । उन्होने कहा, जो हमारी बुराई करता है, वह हमेशा विरोधी नहीं होता । कई बार वही व्यक्ति हमें हमारी कमियों का एहसास कराकर सुधार का अवसर देता है । इसलिये आलोचना से घबराने के बजाय उससे सीख लेने की जरुरत है । उन्होने कहा कि धर्म का काम छिपकर नहीं, बल्कि समाज के बीच होना चाहिए, ताकि उससे अधिक से अधिक लोग प्रेरणा ले सकें ।

## पत्नी से बढ़कर कोई सच्चा दोस्त नहीं होता

1. मुसीबत में देखकर सब साथ छोड़ जाएंगे मगर तुम्हारी हिम्मत और हौसला बढ़ाने के लिये वह ढ़ाल बनकर आखरी समय तक तुम्हारे आगे पीछे खड़ी रहती है।
2. वह बहन की तरह संभालेगी, मां की तरह ममता लुटायेगी। और एक दोस्त की तरह सलाह देगी।
3. वह रोकेगी, टोकेगी क्योंकि उसे तुम्हारी परवाह है। तुम्हारी गलत आदतों से तुम्हे कोई नुकसान ना हो उसे इसकी फिक्र है।
4. तुम उसे मकान बनाकर दोगे तो वह उसे घर बना देगी। तुम उसे अपना अंश दोगे तो वह तुम्हारी वंश बेल बढ़ा देगी।
5. तुम्हारा गुस्सा सहने के लिये, तुम्हारे गलत फैसलों में भी तुम्हारा साथ देने के लिये पत्नी ही होगी।
6. वो लड़ाई करे तो थोड़ा सा लड़ लेना। बाहर कहां लड़ने जाएगी। थोड़ी सी तकरार, थोड़ा सा प्यार। यही जिंदगी का सच्चा आनंद है। जो सिर्फ पत्नी के पास ही मिलता है। इसलिये पत्नी की कदर करो।

## इंद्रियो को विश्राम दे, ऊर्जा को संजोएँ

जितना संभव हो, अपनी इंद्रियो को विश्राम दें। कम बोले-सिर्फ उतना, जितना आवश्यक हो। शब्दो का प्रयोग ऐसे करें जैसे हर शब्द की कीमत चुकानी पड़ रही हो। मौन संभव हो तो सर्वोतम,अन्यथा संक्षिप्त और सार्थक वाणी अपनाएँ।

अपनी आँखो को भी विश्राम दें। लोगो के चेहरों पर कम, प्रकृति पर अधिक दृष्टि रखें-आकाश, समुद्र, वृक्ष और बादलों को देखें। प्रकृति मन में विचारो का जाल नही बुनती, जबकि लोगो के चेहरे अनेक स्मृतियों और प्रतिक्रियाओं को जगा देते है।

अनावश्यक श्रवण और दृश्य उत्तेजनाओं से बचे। समाचार, रेडियो, टीवी और निरर्थक सूचनाओं से कुछ समय का विराम लें। जितनी कम बाहरी हलचल होगी, उतना ही मन शांत और स्थिर होगा।

जब इंद्रियाँ विश्राम पाती है, तब ऊर्जा का संरक्षण होता है। वही संचित ऊर्जा ध्यान, आत्मचिंतन और आंतरिक जागरण में सहायक बनती है। हम प्रायः अपनी मानसिक शक्ति को दिनभर की निरर्थक गतिविधियों में खर्च कर देते है, इसलिये भीतर जाने के लिये आवश्यक सामर्थ्य नहीं बचती। ऊर्जा का संरक्षण ही ध्यान की पूँजी है। जितनी ऊर्जा बचाएगे, उतनी ही गहराई से स्वयं को जान पाएँगे।

**– ओशो**

गिरीश पावेचा
गौरव पावेचा
(O) : 2384349, 2491586
(M) 9826340091, 9179186548
पार्श्वनाथ टिम्बर कॉर्पोरेशन हाऊस सोल्युशन
टाइल्स ❊ मार्बल ❊ ग्रेनाइट ❊ टिम्बर प्लायवुड
दरवाजे ❊ चौखट ❊ सेनेटरी वेयर्स के होलसेल विक्रेता
500/3, जीएनटी मार्केट, धार रोड़, इन्दौर
155-ई.डी., स्कीम नं. 94, खजराना रिंग रोड़ चौराहा, इन्दौर

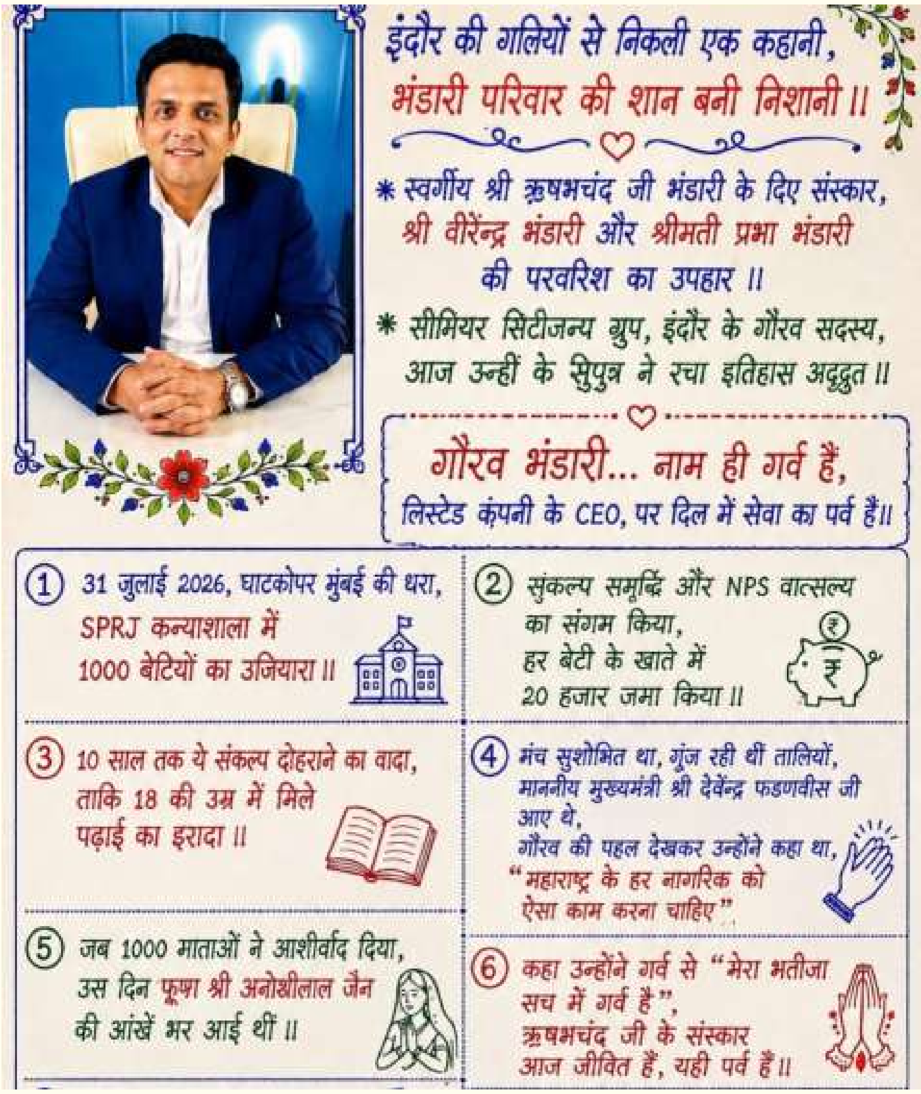


## श्री बाबूलाल जी संघवी का देवलोक गमन

सदर नमन

पत्नी : श्रीमती सिरेकुंवर संघवी

बेटा-बहू : कमलेश-नूतन, ललित-वीणा, विजय-सुषमा संघवी

परिवार बदनावर

बेटी दामाद : सुनीता (नेहा)-प्रदीप चौरड़िया

पायल-पलक सकलेचा

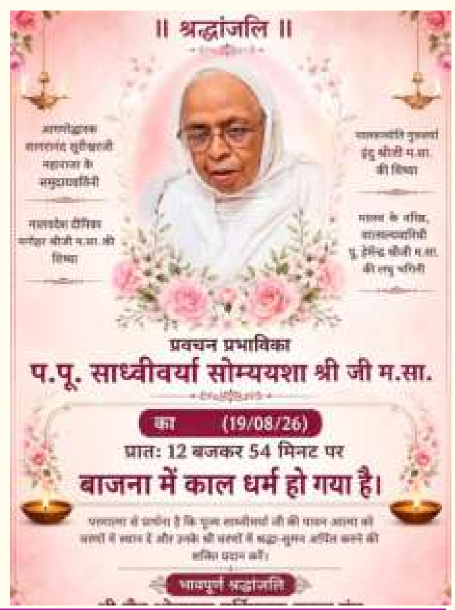

## सम्मान एवं गौरव का क्षण

श्री नवकार परिवार, इन्दौर को जीव दया एवं मानव सेवा के सराहनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। यह सम्मान नगर पालिक निगम इंदौर के महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव जी एवं श्री क्षितिज सिंघल जी, कमिश्नर, नगर पालिक निगम इंदौर द्वारा प्रदान किया।

**मन को इतना मजबूत बनाओ कि किसी के भी व्यवहार से मन की शांति भंग न होने पायें।**

## भगवान नेमिनाथ की भव्य रथयात्रा, जयकारों से गूंजा पीपली बाजार

भगवान नेमिनाथ प्रभु के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक के पावन अवसर पर मंगलवार को पीपली बाजार स्थित श्री अजितनाथ लाल जैन मंदिर से भव्य रथयात्रा निकाली गई। रथयात्रा तपागच्छ के गच्छाधिपति आचार्य श्री विज्ञानप्रभसूरीश्वरजी महाराज एवं गणिवर्य निर्भयप्रभ महाराज की पावन निश्रा में आयोजित हुई।

धर्ममय वातावरण में निकली रथयात्रा में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं, महिला मंडल एवं धर्मनिष्ठ श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रथयात्रा पीपली बाजार से प्रारंभ होकर सराफा, शीतलामाता बाजार एवं मारोठिया बर्तन बाजार सहित प्रमुख मार्गो से होकर निकली। मार्ग में श्रद्धालुओं ने भगवान नेमिनाथ प्रभु के जयकारों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

इस अवसर पर महासंघ अध्यक्ष विजय मेहता, लाल मंदिर ट्रस्ट के प्रकाश जी भंडारी, निलेश जैन, सौरभ कोठारी, अक्षय जैन, अजय व्होरा, नरेन्द्र डांगी, प्रमोद चोरड़िया, अनिल डोसी, राजेश जैन युवा, निलेश स्खलेचा, मुकेश पटवा, युगल जैन, गोलू हरकावत, मनीष कोठारी सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहें।

रथयात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान नेमिनाथ प्रभु के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक को श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाते हुए धर्म, संयम एवं अहिंसा के संदेश को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।

## भगवान नेमीनाथ जन्म कल्यणक धूमधाम से मनाया

इन्दौर। बास्केटबाल हाल में भगवान नेमीनाथ जी का जन्म कल्याणक धूमधाम पूर्वक मनाया गया। नवकार परिवार ने 138 वाँ शान्ति स्नात्र महोत्सव आनन्दपूर्वक नाचते गाते हुए सम्पन्न किया। रेसकोर्स श्री संघ में विराजमान गच्छाधिपति श्री विज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी की निश्रा में कार्यक्रम परिपूर्ण हुआ।

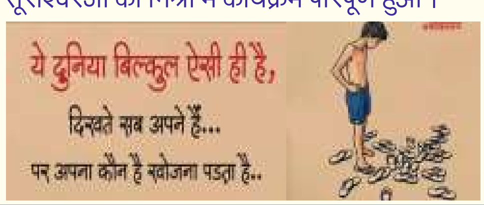


### परमात्मा नेमिनाथ का जन्मकल्याणक एवं साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. का जन्म दिवस : वैराग्य और तप का अनुपम संगम - आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

## भव्य जुलूस

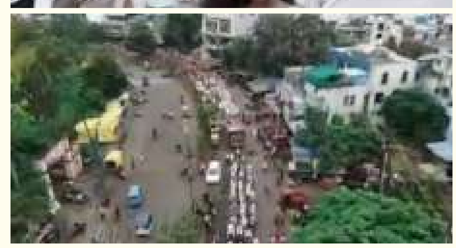

इन्दौर द्वारकापुरी श्री शीतलनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्ति जैन संघ में 15 अगस्त 2026 को भव्य जुलूस निकाला।

## श्री नीलवर्णा पार्श्वनाथ में मोक्षकल्याणक मनाया गया

श्री नीलवर्णा पार्श्वनाथ मन्दिर कंचन बाग में भगवान पार्श्वनाथजी का मोक्ष कल्याणक भव्यातिभव्य औषधियों द्वारा बड़ा उवसग्गहरं अभिषेक सह विशिष्ठ प्राचीन मंत्रों से कमल पुष्प अनुष्ठान किया गया। पावनकारी निश्रा पू. मुनिराज लब्धी सागरजी म.सा. की निश्रा में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। लाभार्थी - त्रिसला बहु मंडल, कंचनबाग, इंदौर

## आगमोद्वारक आचार्य श्री सागरानंद सुरीश्वर जी म.सा.

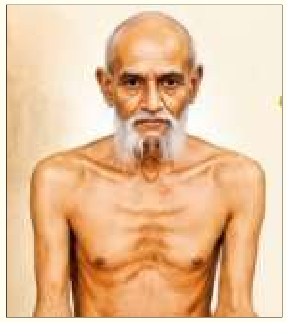

युग बीतते है, सृष्टियाँ भी बदलती है, दृष्टि में भी परिवर्तन आता है, कई युग दृष्टा जन्म लेते है, अनेको की स्मृतियाँ ही शेष रहती है परन्तु कुछ अथवा व्यक्तित्व एवं कृतित्व अपनी अमर गाथाओं से चिर स्थाई बना देते है, उन्ही महापुरुषों का जीवन स्वर्णिम अक्षरो में लिखा जाता है, जो असंख्य जनमानस के जीवन को घने तिमिर से निकालकर उज्जवल प्रकाश सत्यनिष्ठ जीवदया प्रेमी, ज्ञान के भंडार श्री हेमचन्द्र जी का नाम आता है जो आगमोद्वारक बहुश्रुत पूज्य, ज्ञानतीर्थ आनंद सागर सुरीश्वर जी म.सा. के नाम से प्रसिद्ध थे। जिनको हम सागरानंद सूरीश्वर जी म.सा. के नाम से भी जानते है और सदा-सदा जानते रहेंगे।

पूज्य आगमदृष्टा श्री सागरानंद सूरीश्वर जी म.सा. का जिनशासन में जो योगदान है उपकार है उनका वर्णन करना बहुत कठिन है। अपने अल्प शब्दों से उनके जीवन से संबंधित कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित है- जिनशासन के 45 आगमों का आपने उद्धार किया, आगम तो जैसे उनके जीवन के प्राण थे। आचार्य श्री जी के अध्यापन की अपनी अदभुत शैली थी। प्रश्न पूछने की और निराकरण करने की आपकी हास्यात्मक शैली थी।

आप शारदानंद सागर जी के नाम से जाने जाते है, बनारस के विश्वविद्यालय में दिग्गज पंडितो के विशेष आग्रह पर संस्कृत भाषा में धारा प्रवाहबद्ध स्याद्वाद विषय पर प्रवचन दिया। वहां के पंडित भी मंत्र मुग्ध हो गए। आपको पंडितो नें माँ सरस्वती के साक्षात् अवतार माना।

एक बार आप अहमदाबाद पधारने वाले थे तब आचार्य श्री नेमिसूरिजी म.सा. ने अपने शिष्यों से कहा था-"सागर आ रहा है, जितना ज्ञान ले सको ले लेना।" वह तो साक्षात् ज्ञान के सागर है, तुम जितना ज्ञान बल ग्रहण करोगे उतना कम है। इस वाक्य से हमें पता चलता है कि वे कितने ज्ञानी थे। एक समय की बात है आप श्री मोहल्ले में अपने मित्रो के साथ खेल रहे थे। खेलते-खेलते अनायास गेंद खंभे पर टंगे लालटेन से टकरा गई, लालटेन बुझ गया, काँच भी फूट गया सभी बच्चे डर के मारे भाग गए परन्तु आप वही खडे रहे, उसी समय नगर रक्षक वहाँ आ गया और आचार्य श्री जी को डॉटते हुए कहा- ए लड़के, यह लालटेन क्यों तोड़ा ? आगमोद्धारक जी ने कहा- "मैंने नही तोड़ा तोड़ने वाले तो कब से भाग गए।" यह थी उनकी निर्भयता, निडरता । गुरु रुपी शिल्पी पूज्य श्री झवेरीलाल जी मा.सा. ने आपको उपदेशो से परिपक्व कर दिया था। आपको व्याकरण की पुस्तक की आवश्यकता थी जो उपलब्ध नही हो पा रही थी। भरसक प्रयत्नो से एक श्रावक के पास से दीमक लगी हुई व्याकरण मिली। आपने 90 दिनों की अल्पावधि में ही व्याकरण कंठस्थ कर ली। एक बार प्रोफेसर ब्राउन ने अपनी जिज्ञासा का समाधान करने के लिये तार्किक बुद्धि से प्रेरित किया, उन्होने शास्त्रीय पाठ मांगा तो आचार्य श्रीजी ने इस ग्रंथ के इस पेज पर इस नंबर के श्लोक में यह बात कही है, यह भी बता दिया। प्रोफेसर ब्राऊन आपसे बहुत प्रभावित हुए। आपको चलती-फिरती लाइब्रेरी कहा।

आपने अपने संपूर्ण जीवन में एक बार भी डोली का प्रयोग नही किया। आचार्य श्री जी की श्रुतभक्ति, श्रुतोपासना, श्रुतोद्धारक जैसे सद्गुण उनमें सहजता से अवतरित थे।

आप घंटो आगम संशोधन का कार्य करते, कभी दिवाल का सहारा नही लेते यह नियम उन्होने 15 दिवस की अंतिम समय की समाधि तक अखंड पालन किया।

ऐसे भी आगमवक्ता, आगमोद्धारक, आगम रत्नाकर, आगम ज्योतिर्धर, आद्य पुरुष आपकी यश और कीर्ति आज भी अमर है, और युगो युगो तक अमर रहेगी। - श्रीमति प्रभा जैन, देवास।

**कुए का पानी सब फसलों को एक समान मिलता है, लेकिन फिर भी करेला कड़वा, गन्ना मीठा और इमली खट्टी होती है यह दोष पानी कान ही है, बीज का है..वैसे ही मनुष्य सभी एक समान है, परन्तु उन पर संस्कारो का असर पड़ता है।**

**थोड़ा सा बचपन साथ रखियेगा जिंदगी की शाम में, उम्र महसूस ही न होगी, सफर के आखरी मुकाम में..**

**अनुभव भी गलत फैसलो से ही आता है...दुनिया में सबसे ताकतवर इंसान वो है.... जो धोखा खा के भी लोगो की मदद करना नही छोड़ता।**

### गहरी बात लिख दी है किसी ने

**बेजुबान पत्थर पे लदे है, करोड़ो के गहने मंदिरो में, उसी दहलीज पर एक रुपये को तरसते नन्हे हाथों को देखा है।**

**सजे थे छप्पन भोग और मेवे मूरत के आगे, बाहर एक फकीर को भूख से तड़प के मरते देखा है।**

**जिसने न दी माँ बाप को भर पेट रोटी कभी जीते जी, आज लगाते उसको भंडारे मरने के बाद देखा है।**

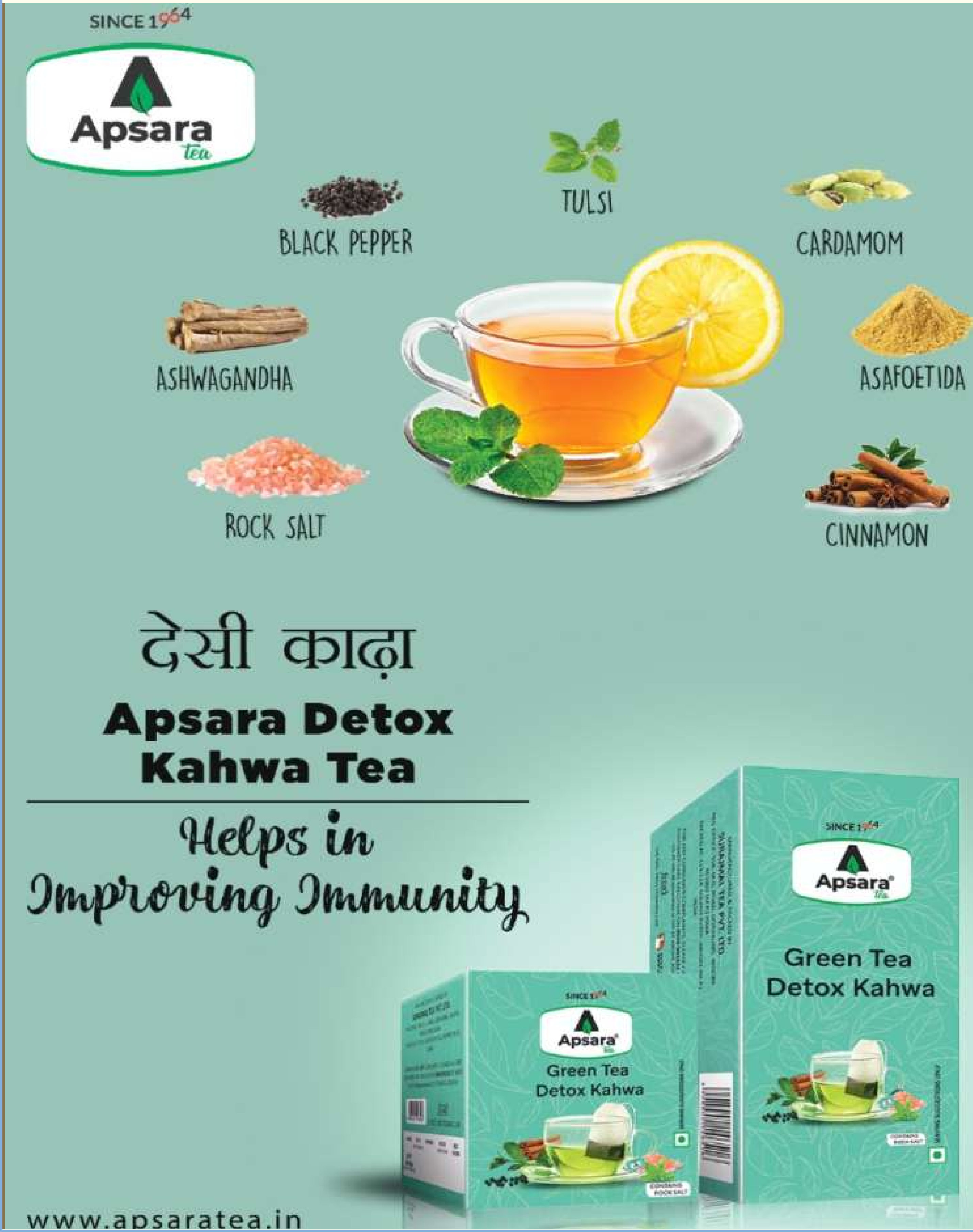
SINCE 1964
Apsara tea
TULSI
BLACK PEPPER
CARDAMOM
ASHWAGANDHA
ASAFOETIDA
ROCK SALT
CINNAMON
देसी काढ़ा
Apsara Detox
Kahwa Tea
Helps in
Improving Immunity
Green Tea
Detox Kahwa
Green Tea
Detox Kahwa
www.apsaratea.in

## इस धरती पर क्या लेने आए हो

रामायण के अंत में माता सीता धरती में समा गई। भगवान श्री राम ने जल समाधि ले ली।

महाभारत का अंत भगवान् श्री कृष्ण का निधन और पांडवो की मृत्यु हो गई।

जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु ही है। और दुनिया चलती रहती है कोई किसी के लिये नही रुकता।

कंचन जैसी काया भी एक दिन भद्दी दिखाई देखे लगेगी। झुर्रियाँ पड़ जायेगी। खुद का शरीर ही हमेशा साथ नही देता तब दूसरा कौन साथ देगा। यहाँ हमेशा के लिये कुछ भी नही है।

इसलिये सात पीढ़ीयो के लिये इकट्ठा करना बंद करो। इतना ही कमाओ जितने में किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े।

यहाँ जीने आये हो। शौक पूरे करो। दुनिया देखो। कुछ पल सुकून से गुजारो, तेरा मेरा करने में कुछ नही रखा।

उम्र भाग रही है। इकट्ठा किया हुआ कुछ भी साथ नही जायेगा सब यही रह जायेगा।

---

जो नसीब में है,वह चलकर भी आपके पास आ जाएगा। और जो नसीब में नही है, वह सामने आकर भी ठहर नहीं पाएगा।

जीवन को आवश्यकता से अधिक गंभीर मत बनाइए, यहाँ हर व्यक्ति एक दिन अपनी यात्रा पूरी करके आगे बढ़ जाता है।

यदि जीवन केवल सुखों से भरा होता, तो जन्म लेते समय आँसू न आते।

और यदि जीवन केवल दुखो से भरा होता, तो विदा होते समय किसी की आँखे नम न होती।

## ''अर्थ को वेल्यु की श्रेणी में लाने का श्रेय धर्म को ही है ।''

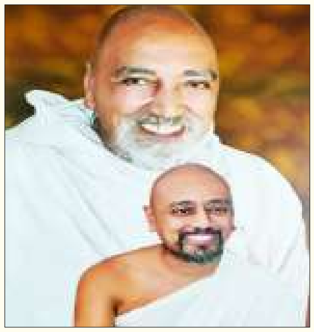

उपाध्याय प्रवर मुनि प.पू. श्री मनीष सागर जी म.सा.

नैतिकता (धर्म) से मर्यादित अर्थ को उचित माना गया है। अर्थ महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है - भौतिकवादी विचारधारा के समान नैतिक रुप में देखती है, तथापि यह अर्थ को केवल भोग का नही, किन्तु नैतिक एवं चारित्रिक उन्नति का साधन भी मानती है। साथ ही, यह अनुचित साधनों से किए जाने वाले धनार्जन को बिल्कुल भी उचित नही मानती । इसके अनुसार सुख का मूल धर्म है और धर्म का मूल अर्थ है, अतः अर्थोपार्जन करना ही चाहिए।

धर्म से विरुद्ध अर्थ महत्वहीन है, क्योंकि अर्थ की तुलना में धर्म या नैतिकता ज्यादा महत्वपूर्ण है । नैतिक, विचारधारा में धर्म की तुलना में अर्थ को गौण माना गया है। कारण यह है कि अर्थ भले ही इन्द्रिय-सुख की प्राप्ति में सहायक हो, किन्तु अकेला अर्थ मानक के उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति का माध्यम नहीं बन सकता। इसके अनुसार, अर्थ तब तक मूल्यहीन है, जब तक वह धर्मानुकूल नहीं हो जाता । अतः अर्थ को मूल्य की श्रेणी में लाने का श्रेय धर्म को ही है। संक्षेप में कहे तो नैतिक विचारधारा की दृष्टि में जीवन इस प्रकार जीना चाहिए-

जीवन में अर्थ की आजीवन आवश्यकता को स्वीकार करना चाहिए।

अर्थोपार्जन के लिये अनैतिक के बजाय नैतिक तरीकों को अपनाना चाहिए।

जीवन में धर्म, अर्थ एवं काम में उचित तालमेल रखना चाहिए।

अर्थ को जीवन जीने का साधन अवश्य मानना चाहिये, किन्तु सर्वोच्च प्राथमिकता तो धर्म को ही देनी चाहिए।

दादावाड़ी रामबाग इन्दौर पर प्रति सोमवार पूर्णिमा दादागुरु की भक्ति एवं प्रत्येक पूर्णिमा को प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक दादागुरु जी का इक्तीसा, 31 बार। पधारकर लाभ लेवें।

## क्षमा की धार्मिक और वैज्ञानिक-मनोवैज्ञानिक अहमियत - डॉ.जयंतीलाल भंडारी

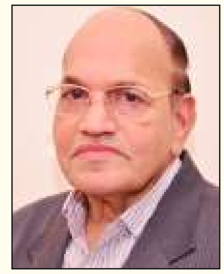

डॉ. जयंतीलाल जी भंडारी

दुनिया के प्रमुख विश्वविद्यालयो के दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान विभागों द्वारा विभिन्न धर्मो के सिद्धांतो के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित शोध-रिर्पोटो के मुताबिक, जैन धर्म में क्षमा का व्यापक रुप इसे सभी धर्मो से अद्वितीय बनाता है। इन रिर्पोटो के अनुसार, क्षमा संपूर्ण विश्व के लिये जैन धर्म का अमूल्य और बेजोड़ उपहार है । जैन परंपरा में क्षमा को आत्मा का स्वभाव और सर्वोच्च नैतिक गुण माना गया है । क्षमा केवल एक व्यावहारिक गुण नही, बल्कि कर्म-निर्जरा और मोक्ष-प्राप्ति का माध्यम भी है।

उल्लेखनीय है कि क्षमा प्रत्येक जैन धर्मावलंबी के जीवन का सबसे बड़ा आभूषण है। ''क्षमा वीरस्य भूषणम '' प्रत्येक जैन व्यक्ति के जीवन का ध्येय वाक्य होता है। वस्तुतः जैन शास्त्रो की संपूर्ण आध्यात्मिक यात्रा क्षमा से ही प्रारंभ होती है और क्षमा पर ही जाकर अपनी चरम पूर्णता को प्राप्त करती है।

यह बात महत्वपूर्ण है कि क्षमा की अहमियत न केवल धार्मिक रुप से, बल्कि आधुनिक चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी उभरकर सामने आती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान भी इस बात की पूर्ण पुष्टि करते है कि क्षमा मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ को बनाए रखने की सबसे प्रभावकारी और प्राकृतिक औषधी है । क्षमा के गुण को जीवन में नियमित रुप से अपनाने पर विभिन्न बीमारियों से बचा जा सकता है । जैसे ही व्यक्ति अपने भीतर क्षमा का भाव धारण करता है, उसके मस्तिष्क में शांतिदायक और आनंद देने वाले रसायनों का स्त्राव आरंभ हो जाता है। यह जैविक प्रक्रिया तुरंत हृदय गति को नियंत्रित करती है, मानसिक अग्नि को शांत करती है और शरीर के समस्त तंत्रो को पुर्नजीवित कर नव-ऊर्जा प्रदान करती है। आधुनिक मनोचिकित्सक भी यह स्वीकार करते है कि जब आप किसी अन्य व्यक्ति को उसकी भूल के लिये क्षमा नही करते, तो आप वास्तव में भूतकाल के किसी बुरे अनुभव और आघात का मानसिक बोझ स्वयं ढो रहे होते है तथा अनजाने में आत्म-पीड़ित बने रहते है । क्षमा वास्तव में दूसरे को दोषमुक्त करने से पहले स्वयं की आत्मा को मानसिक कैद, संताप और आंतरिक क्लेश से सदा-सदा के लिये मुक्त करने की एक परम अलौकिक प्रक्रिया है।इसमे कोई दो मत नहीं है विश्व के किसी भी अन्य दर्शन या संस्कृति में संपूर्ण सृष्टि के साथ एक साथ क्षमा-याचना करने की ऐसी पारदर्शी, निष्कपट और उदात्त परंपरा देखने को नही मिलती, जैसी जैन धर्म में पाई जाती है । संवत्सरी प्रतिक्रमण के तहत क्षमा याचना के माध्यम से प्रत्येक जैन धर्मावलंबी के अत्यंत नम्र होकर यह पवित्र संकल्प लेता है कि उसकी संसार की समस्त चौरासी लाख जीव-योनियों के साथ मैत्री है और किसी भी जीव के साथ कोई बैर या शत्रुता नहीं है । व्यक्तिगत धरातल पर अपने परिजनो, आत्मीयों, मित्रो के यहाँ तक कि विरोधियो से भी क्षमा मॉगकर हृदय के समस्त द्वेष-भाव को सदा के लिये धो दिया जाता है। यदि हम अपने जीवन में क्षमा धर्म को व्यावहारिक रुप में अपनाएं, तो इससे न केवल हमारी आत्मा पवित्र होगी, बल्कि समाज और संपूर्ण विश्व में शांति, प्रेम तथा करुणा की राह भी प्रशस्त होगी ।(लेखक देश के ख्यात शिक्षाविद और अर्थशास्त्री है।)

## एक बेटी की अर्जी

"पापा ! आज आप मेरी एक बात मानेंगे....?"

पापाः "गुटखा छोड़ने के अलावा जो भी कहेगी, सब मानूगाँ।"

बेटीः "मैं आपसे गुटखा छोड़ने को नही कहूंगी बस इतना चाहती हूं कि आप सुबह शाम तक जितना गुटखा खाते है, वह सब आकर मुझे बात दिया करें।"

पापाः "हाँ, मैं तुझे वचन देता हूँ कि बिल्कुल सच्चाई से तुझे सब कुछ बता दूँगा।"

फिर बेटी ने दूसरी बात रखी :"अगर मैं कुछ और माँगू तो देंगे ?"

पापाः "हाँ बेटा ! जरूर दूँगा, आज तेरा जन्मदिन है, जो मांगेगी, वो दूँगा।"

बेटी : "पर आप पलट तो नही जाएंगे ना...?

पापा ने कहाः "तेरे सामने कभी नहीं पलटूँगा।"

बेटी ने मौका देखकर कहा, जितनी बार आप दिनभर गुटखा खाएँ, उतने ही थप्पड़ आपको शाम को घर आकर मेरे गाल पर जोर से मारने होंगे।"

बेटी की बात सुनकर पिता स्तब्ध रह गए, पिता के पैरों तले जमीन खिसक गई।

पिता बोले : "अपने जान के टुकड़े को मैं थप्पड़ मारूँ ...?"

तब बेटी ने कहा : "पापा ! भगवान न करे, पर अगर गुटखा खाने से जो नुकसान होता है, वो आपको भी हो गया और आप हमारे बीच में नहीं रहे, तो दुनिया आपकी गैर मौजूदगी में हमें ऐसे तमाचे मारेगी जिन्हें मैं कभी सह नही पाऊँगी।"

"आपके थप्पड़ मैं सह सकती हूँ पापा, लेकिन दुनिया के ताने नही।"

बेटी की बात सुनकर पिता का दिल पिघल गया जो गुटखा कोई नही छुड़ा सका, वो गुटखा बेटी ने हमेशा के लिये छुड़वा दिया। आशा करते है कि हर परिवार, समाज और देश को ऐसे बेटे-बेटियों मिलें, और साथ ही ऐसे पिता भी,जो अपने बच्चों की भावनाओं को समझ सकें।

**धर्म को केवल सुनना नहीं, बल्कि जीवन में उतारना ही सच्ची साधना**

## बेईमानी का बीज कहाँ से आया

बेटे ने अपने पिता से पूछा, पापा, चाचा-ताऊ की जो चालाकियाँ हमें 25 साल की उम्र में समझ में आ गई,

वो आपको 60 साल की उम्र तक भी क्यों समझ नही आई ?

पिता मुस्कुराए और बोले बेटा, क्योंकि हम रिश्तो के दौर में पैदा हुए थे और तुम लोग पैसो के दौर में हमारे लिये रिश्ते बड़े थे, इसलिये हम हर बात में भरोसा ढूँढ़ते थे, लेकिन तुम्हारी पीढ़ी हर रिश्ते में फायदा ढूँढती है आज भाइयो के बीच जो दूरियाँ, जलन ओर बेईमानी आई है, उसकी वजह सिर्फ लोग नही, बल्कि सोच का बदलना है।

अब हाल ये हो गया है कि भाई-भाई के साथ बैठने के पहले भी फायदा और नुकसान सोचता है। शायद इसलिये भगवान भी, अब हर घर में एक ही औलाद भेज रहा है, ताकि ना भाई होंगे, ना रिश्तो में कड़वाहट होगी।'

## संगति का सदैव ध्यान रखें

एक बार एक शिकारी शिकार करने गया, शिकार नहीं मिला, थकान हुई और एक वृक्ष के नीचे आकर सो गया। पवन का वेग अधिक था, तो वृक्ष की छाया कभी कम -ज्यादा हो रही थी , डालियों के यहाँ-वहाँ हिलने के कारण।

वही से एक अति सुन्दर हंस उड़कर जा रहा था, उस हंस ने देखा की वह व्यक्ति बेचारा परेशान हो रहा है, धूप उसके मुँह पर आ रही है तो ठीक से सो नही पा रहा है, तो वह हंस पेड़ की डाली पर अपने पंख खोल कर बैठ गया ताकि उसकी छाँव में वह शिकारी आराम से सोयें। वह सो रहा था , इधर कौआ आकर उसी डाली पर बैठा, इधर-उधर देखा और बिना कुछ सोचे समझे शिकारी के ऊपर अपना मल विसर्जन कर वहाँ से उड़ गया। तभी शिकारी उठ गया और गुस्से में यहाँ-वहाँ देखने लगा और उसकी नजर हंस पर पड़ी और तुरंत धनुष बाण निकाला और उस हंस को मार दिया। हंस नीचे गिरा और मरते मरते कहा-मैं तो आपकी सेवा कर रहा था, आपने मुझे ही मार दिया ? इसमें मेरा क्या दोष? उस समय पद्मपुराण के शिकारी ने कहाः यद्यपि आपका जन्म उच्च परिवार में हुआ, आपकी सोच आपके तन की तरह ही सुंदर है, आपके संस्कार शुद्ध है, यहाँ तक की आप अच्छे इरादे से मेरे लिये पेड़ की डाली पर बैठ मेरी सेवा कर रहे थे, लेकिन आपसे एक गलती हो गयी, की जब आपके पास कौआ आकर बैठा तो आपको उसी समय उड़ जाना चाहिये था। उस दुष्ट कौए के साथ एक घड़ी की संगत ने आपको मृत्यु के द्वार पर पहुंचाया है।

शिक्षा- संसार में संगति का सदैव ध्यान रखना चाहिये। जो मन, कार्य, और बुद्धि से परमहंस है उन्हें कौओं से दूरी बनाये रखना चाहिये।

## खाओ मण भर, छोड़ो न कण भर उतना ही लो थाली में व्यर्थ न जाये नाली में

रामायण के अनुसार सीता जी की खोज के समय हनुमान जी ने जब रावण की रसोई में प्रवेश किया तब रावण की जूठी थाली देख कर हनुमान जी समझ गये कि रावण की मृत्यु निकट आ गई है, क्योंकि रावण ने थाली में दही जूठा छोड़ रखा था।

भोजन में जूठा छोड़ने वाले की आयु कम होती जाती है। शायद इसी कारण से हमारे पूर्वज खाना खाकर थाली में पानी डाल कर फिर जूठन को घोल कर पी जाया करते थे।

विद्वानो के अनुसार थाली में झूठा छोड़ना माँ अन्नपूर्णा और मां लक्ष्मी का अपमान माना जाता है। ऐसा करने से आर्थिक स्थिति कमजोर होती है।

भोजन जूठा छोड़ने वाले बच्चे पढ़ाई में कमजोर होते चले जाते है।

थाली में जूठा भोजन छोड़ने से शनि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। चंद्रमा की भी अशुभ दृष्टि की वजह से मानसिक बीमारियां भी व्यक्ति को घेर लेती है। थाली में झूठा छोड़ने वाला व्यक्ति पाप का भागी बनता है।

## सज्जन लोग अकेले क्यों रह जाते है ?

यह संसार जितना आकर्षक दिखता है, वास्तव में वैसा है नहीं । क्योंकि यहां सच्चाई, ईमानदारी और सहजता और सरलता जैसी चीजें एक सपने जैसा बन कर रह गई है । **सज्जन से पेश आता है,** बदले में वह भी औरों से **वैसे ही व्यवहार की अपेक्षा करता है ।** किन्तु बदले में उसे कदम-कदम पर धोखा, झूठ-छल मिलते है, जिससे वह दुखद आश्चर्य से भर मानसिक रुप से टूट जाता है । यहीं से शुरु होता है अकेलापन और घुटनभरी जिंदगी ।

अच्छे लोग अक्सर अकेले रह जाते है ? यह सवाल बहुत लोगों के मन में आता है । जो लोग दिल के साफ होते है, दूसरों की मदद करते हैं, किसी का बुरा नही सोचतें, वही लोग कई बार सबसे ज्यादा अकेलापन महसूस करते हैं । इसके पीछे कुछ गहरी बातें छिपी होती है ।

आईए इन बातों से समझते है-

पहली बात, अच्छे लोग दिल के सच्चे होते हैं । वे दिखावा करना नहीं जानतें । आज की दुनिया **में बहुत लोग मतलब के रिश्ते निभाते हैं । लेकिन अच्छे लोग मतलब के रिश्ते निभाते है ।** लेकिन अच्छे लोग रिश्तों में सच्चाई और विश्वास ढूंढतें है । जब उन्हें झूठ, धोखा या स्वार्थ दिखाई देता है, तो वे धीरे-धीरे लोगों से दूरी बना लेते है । इसलिये वे भीड़ में रहकर भी अकेले हो जाते है । दूसरी बात, अच्छे लोग दूसरों की खुशी का बहुत ध्यान रखते है । वे हमेशा सबकी मदद करने की कोशिश करते है । लेकिन अपनी भावनाओं को अक्सर छुपा लेते है । लोग उनकी अच्छाई का फायदा उठा लेते है । पर उनके दर्द को समझने की कोशिश बिल्कुल नहीं करते या बहुत कम करते है । जब बार-बार दिल टुटता है तब अच्छे लोग शांत रहना सीख जातें है और अकेले रहना पसंद करने लगते है ।

तीसरी बात, अच्छे गलत संगति से दूर रहते है । उन्हें झूठी बातें, फालतू दिखावा और दूसरों को नीचा दिखाना पसंद नहीं होता । वे अपने आत्म सम्मान को सबसे ऊपर रखते है । इसलिये हर जगह घुलना-मिलना उनके लिये आसान नहीं होता । वे कम लोगों से जुड़ते है लेकिन दिल से जुड़ते है । यही कारण है कि उनकी दोस्ती कम होती है, पर सच्ची होती है ।

चौथी और सबसे महत्वपूर्ण बात, अच्छे लोग अकेले होकर भी मजबूत बनना सीख जाते है । वे समझ जाते है कि हर किसी से उम्मीद रखना जरूरी नही । वे अपने सपनों, अपने काम और अपनी शांति पर ध्यान देना शुरु कर देते है ।अकेलापन उन्हें कमजोर नहीं बनाता बल्कि अंदर से और मजबूत बना देता है । इसलिये अगर आप भी अकेले है तो खुद को कमजोर मत समझिए । कई बार अकेले वही लोग रह जाते है, जिनका दिल सबसे ज्यादा साफ और सच्चा होता है ।

**चातुर्मास पानीपत (हरियाणा)**

श्री राजेश मुनि जी ''सिद्धा जैसो जीव है, नीव सोही सिद्ध होय
कर्म मेल का अंतर बुझे बिरला कोय, कर्म पुदगर रूप है,
जीव रूप है ज्ञान दो मिलकर बहु रुप बिछड्या पद निर्वाण'

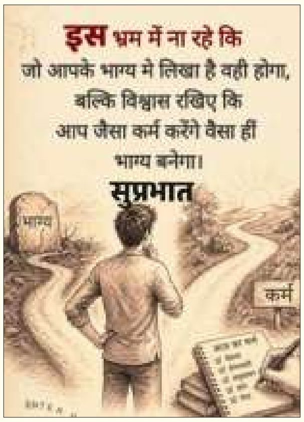


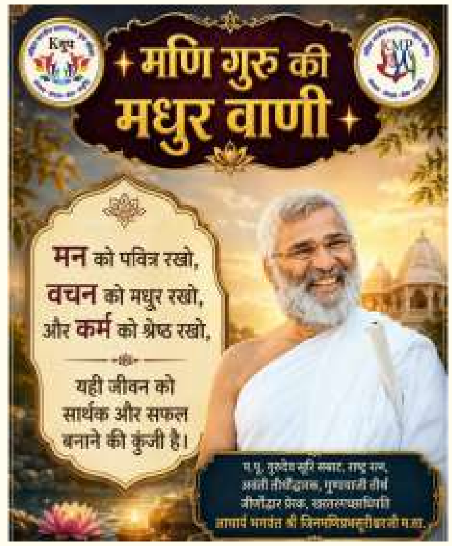


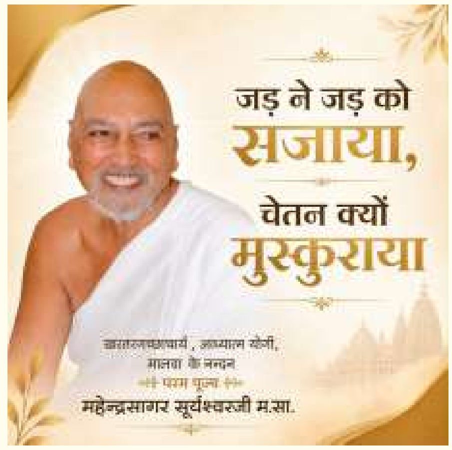


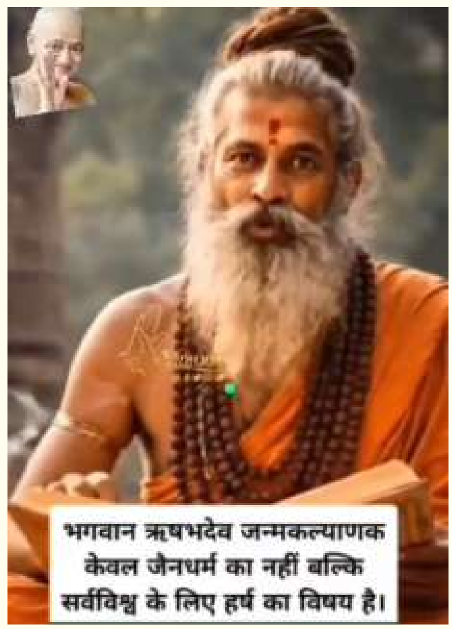


जीवन मिलना भाग्य की बात है मृत्यु होना समय की बात है, लेकिन मृत्यु के बाद भी लोगों के दिलों में जीवित रहना ये कर्मो की बात है ।

## इरियावहिया सूत्र याने लघु प्रतिक्रमण सूत्र

एक इरियावहिया सूत्र में, जीवो से जो पाप हुये है उसकी 18,24,120 प्रकार से माफी मांगी गई है। मिच्छामि दुक्कड़म याने (किसी हुये पाप,दुष्कृत्य..मित्थ्या हो,,,उनकी माफी माँगता हूँ।)

जीव के 563 भेद है।

563 भेदो की 10 प्रकार से हिंसा होती है। अभिहिया, बत्तिया, लेसिया,संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओं ठाणं संकामिया....563 गुणा 10-5630

अब ये हिंसा राग या द्वेष के कारण करते है

इसलिये........5630 गुणा2--11,260

मन,वचन, काया से हिंसा करते है

इसलिये 11260 गुणा 3-33,780

करण, करावण, अनुमोदना तीन तरीके से हिंसा का पाप लगता है।...33780 गुणा 3-1,01,340

अरिहंत, सिद्ध, साधु, देव, गुरु, आत्मा की साक्षी में की गई हिंसा.....3,04,020गुणा6-18,24,120

ऐसे इरियावहिया सूत्र में 18,24,120 प्रकार के मिच्छामि दुक्कडम दिया जाता है।

एक इरियावहिया सूत्र की ताकत है मोक्ष देने की अइमुत्ता मुनि ने इरियावहिया सूत्र बोलते बोलते केवल ज्ञान प्राप्त किया था, वही इरियावहिया सूत्र हमें मिला है।

हमें इस इस काल में मोक्ष ना मिले पर भावपूर्वक इरियावहिया सूत्र बोलने से हमारे बहुत कर्मो की निर्जरा होती है और हम मोक्ष की ओर आगे बढ़ते है।

ऊपर वाला जब आपका बायोडाटा देखेगा, तब वह यह नहीं देखेगा कि आप कितनी बार हरिद्वार गये, गंगाजी में स्नान किया या बद्रीनाथ के दर्शन किये।

वह यह देखेगा कि आपने अपने जीवन में कितने अच्छे कर्म किये, किसका दिल जीता, किसका दिल दुखाया, किसकी मदद की और किसके साथ अन्याय किया।

इंसान की असली पहचान उसके कर्म है, केवल कर्मकांड नहीं। इसलिये जीवन में ऐसे कर्म करे कि ईश्वर के सामने सिर ऊँचा रहे।

## श्री बाबूलाल जी संघवी का देवलोकगमन

बदनावर । सुजानमल जी संघवी के छोटे भाई एवं कमलेश ललित, विजय,सुनीता के पूज्य पिताजी एवं गौरव लवी लक्ष्य के दादाजी बाबूलाल जी संघवी का देवलोकगमन आज दिनांक 3 अगस्त सोमवार को हो गया है। विनितः- संघवी परिवार, बदनावर, इंदौर, धार, उज्जैन ।

## श्री सुशील डोसी का स्वर्गवास

इंदौर ।स्वर्गीय श्री हरीश जी डोसी के सुपुत्र, प्रेमचंद जी के भतीजे, अनिल, महेश, श्रीमति शीतल के भाई, सारांश के बड़े पापा, रितिक (ओशू) एवं आस्था के पिताजी, श्री सुशील जी जैन (प्यारूभाई) का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 23अगस्त को हो गया है । शोकाकुल-डोसी (जैन) परिवार ।

## श्री मनोहर लाल जी गोखरू का स्वर्गवास

इंदौर । स्व. भंवरलाल जी गोखरू के सुपुत्र, स्व.हुकुमचंद जी, स्व.कल्याण जी (पूर्व सांसद), बसंत जी, नरेन्द्र जी भतीजे,रश्मि,अमित के पिताजी, नमिषा, नैतिक के दादाजी, मनोहरलाल जी गोखरू व कोषाध्यक्ष, रतनबाग जैन मंदिर ट्रस्ट इंदौर का निधन शुक्रवार 31 जुलाई 2026 को हो गया है । शोकाकुल-सुशील, ललित गोखरू, अमित जैन एवं समस्त गोखरू परिवार ।

## श्री पवन जी बम्बोरी का स्वर्गवास

इंदौर । स्व श्री भंवरलाल जी बम्बोरी के सुपुत्र, हमारे लघु भ्राता एवं रोहित, मोहित, सोहित के काकाजी, अरिहंत के पिताजी, श्री पवन बम्बोरी (केसुर वाले) स्वर्गवास दिनांक 1अगस्त को इंदौर में हो गया है ।

शोकाकुल परिवार-महेश बम्बोरी, दिनेश बम्बोरी, ललित बम्बोरी, बम्बोरी परिवार ।

**''खुशी'' के लिये बहुत कुछ इकट्ठा करना पड़ता है ऐसा हम समझते है। किन्तु हकीकत में ''खुशी'' के लिये बहुत कुछ छोड़ना पड़ता है, ऐसा ''अनुभव'' कहता है ।**

## श्री चाँदमल जी डांगी का स्वर्गवास

इंदौर ।श्री चाँदमल जी डांगी (सुपुत्र स्व.श्री प्यारचंद जी डांगी) का निधन दिनांक 25 जुलाई 2026 शनिवार को हो गया है । शोकाकुल- महावीर प्रसाद, दिलीप, मुकेश, पंकज, विपुल, संदीप, विनोद, प्रदीप, ऐकलेश, रोहिल,ऋषभ, सिद्धार्थ, सोहिल,नक्ष, संविक, विहान एवं समस्त डांगी परिवार ।

## श्री मोतीचन्द जी वोहरा का स्वर्गवास

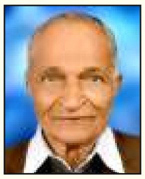

इंदौर । सीए प्रकाश बोहरा, ज्ञानचंद वोहरा, सीए ऋषभ वोहरा, राजेश वोहरा के पुज्यनीय पिताजी एवं विमल, सीए शरद, सीए पीयूष, सौम्य, सुयश वोहरा के दादाजी श्री मोतीचंदजी वोहरा का स्वर्गवास दिनांक 9 अगस्त 2026 को हो गया है । शोकाकुल- प्रकाश बोहरा एण्ड कंपनी, ऋषभ वोहरा एण्ड कंपनी ।

## श्रीमति ज्योति बैन का अरिहंतशरण

इंदौर । स्वर्गीय श्री पुखराज जी, श्री भोगीलाल जी जैन की पुत्रवधु श्री किशोर जी जैन की धर्मपत्नी भूपेन्द्र, नरेन्द्र,रुपेश, आशीष की भाभी अभिषेक, अंशुल की माताजी निरल एवं प्रियल की बड़ी मंमी आन्या, अरिहा, अवीर दादी जी श्रीमति ज्योति बैन जैन का अरिहंतशरण 23 जुलाई को इंदौर में हो गया है ।

## श्री भेरूलालजी सेलोत का स्वर्गवास

इन्दौर । जीवदयापालक, धर्मनिष्ठ, निष्काम, कर्मयोगी, धरावराधाम गोशाला के संस्थापक, प्रबन्ध ट्रस्टी श्री भेरूलाल जी सेलोत का 17 अगस्त 2026 को स्वर्गवास हो गया ।

शोकाकुल-राजेश-मधु सेलोत (सी.ए) एवं सेलोत परिवार ।

बदनावर में स्थिरवास हेतु विराजित मालव सिंहनी महासती पूज्या श्री कौशल्या कुंवर जी म.सा. की सुशिष्या स्थविरा महासती पूज्या श्री निर्मला जी म.सा. का आज दोपहर कालधर्म हो गया है ।

## चुपचाप पढ़ लेना

एक बार एक गुरु ने अपने शिष्य से कहा, ''आज पूरे दिन किसी से बहस मत करना, केवल मौन रहकर सबको देखना।'' शिष्य ने वैसा ही किया। लोगो ने उसकी आलोचना की, कुछ ने उसका मजाक उड़ाया, लेकिन वह शांत रहा।

शाम को गुरु ने पूछा.''आज क्या सीखा ?'' शिष्य बोला, ''गुरुदेव मैंने जाना कि हर बात का जबाव शब्दों से नही दिया जाता। कई बार मौन सबसे बड़ा उत्तर होता है।'' गुरु मुस्कुराए और बोले,''जो व्यक्ति हर बात पर प्रतिक्रिया देता है, वह अपनी शांति खो देता है। लेकिन जो सही समय पर मौन रहना सीख जाता है, वह जीवन की सबसे बड़ी जीत हासिल करता है।

## क्या आप जानते है ?

● भारतीय रेल नेटवर्क दुनिया का चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क है। ये 65000 किलोमीटर से अधिक लंबा है। ● वर्ल्ड पॉपुलेशन रिव्यू के अनुसार अमेरिका 220000 किमी के साथ पहले, चीन (159000) दूसरे व रूस (105000) तीसरे स्थान पर है। ● महाराजा एक्सप्रेस भारत की सबसे लग्जरी व महंगी रेलगाड़ियो में से एक है। इस रेल में 5 स्टार होटल जैसी सुविधाएँ होती है।● 16 अप्रैल 1853 को देश की पहली ट्रेन महाराष्ट्र के मुंबई से ठाणे के बीच चली थी। ● भारत में हर दिन 2.3 करोड़ यात्री रेल में सफर करते है। ● जम्मू-कश्मीर के चिनाब में बना पुल दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज है। इसकी ऊँचाई 300 मीटर से भी ज्यादा है। ● वंदे भारत ट्रेन देश की सबसे तेज मानी जाती है। इसकी अधिकतम रफ्तार 160 किमी प्रतिघंटा है। ● प्लेटफार्म की संख्या के हिसाब से पश्चिम बंगाल का हावड़ा स्टेशन सबसे बड़ा है। यहाँ 23 प्लेटफार्म है। ● कर्नाटक के हुबली स्टेशन पर स्थित प्लेटफार्म दुनिया का सबसे लंबा प्लेटफार्म है। ये 1500 मीटर लंबा है।

## हाथो से भोजन करना क्यों है लाभप्रद

आयुर्वेद के अनुसार हमारा शरीर पंचतत्वो से मिलकर बना है और ये तत्त्व हमारे हाथ में मौजूद है. अगूंठा तत्व, तर्जनी वायु तत्व, मध्यमा-आकाश तत्व, अनामीका पृथ्वी तत्व, कनिष्ठाका-जल तत्व। जब हम हाथ से भोजन खाते है तो अंगूठे तथा अंगुलियो को मिलाकर खाना खाते है। अतः सारे तत्त्वों को एकजुट करते है, जिससे भोजन ऊर्जादायक तथा स्वास्थय वर्धक बन जाता है। हाथ से भोजन करने से हमारा मस्तिष्क हमारे पेट को संकेत देता है, जिससे पाचन सुधरती है।

## बारिश में फूड पॉइजनिंग से बचाएगी ये टिप्स

मानसून आते ही पेट की बीमारियाँ अचानक बढ़ जाती है। बारिश के दिनों में हवा की नमी और जगह-जगह जमा पानी बैक्टीरिया और वायरस को बढ़ावा देते है। जिससे फूड पॉइजनिंग और पेट के इंन्फेक्शन (गट इन्फेक्शन) का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। ऐसे में थोड़ी सी लापरवाही आपको सीधे अस्पताल पहुँचा सकती है।

नमी और दूषित पानी है असली वजह-नमी वाले मौसम में खाना जल्दी खराब होता है। खाना बनाते समय सफाई न रखी जाए, तो वह इन्फेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। इस वजह से गैस्ट्रोएंटोराइटिस , फूड पॉइजनिंग, टाइफाईड और वायरल डायरिया जैसी बीमारियाँ इस मौसम में आम हो जाती है। इन गलतियों से पेट में पहुंचते है कीटाणु -मानसून में ज्यादातर पेट के इन्फेक्शन खराब खाने और दूषित पानी से होते है।इसकी वजह गंदी जगहों या सड़क किनारे बना खाना, बिना धोएँ कच्ची सब्जियाँ, सलाद या कटे हुए फल खाना और अधपका मीट या सीफूड खाना हो सकती है।

## कुछ वर्षो बाद ये हालात होंगे

1. मानसिक बीमारिया और अकेलापन चरम पर होगा।
2. मशीने काम करती इंसान पूरी तरह निकम्मा होकर कमरो में बंद हो जाएगा।
3. न्याय सिर्फ अमीरों की दासी बन जाएगा, अदालते और कानून सिर्फ ताकतवर लोगो की ढ़ाल बनेंगे।
4. शिक्षा और स्वास्थय पूरी तरह व्यापार बन जाएगा।
5. गरीब की शादी नही होगी।
6. स्त्री पुरुष विवाह करने से इंकार कर देंगे। रिलेशनशिप का जमाना होगा। हर साल साथी बदलें जायेंगे।
7. प्रेम के नाम पर सिर्फ शरीर भोगें जाएगें।
8. इंसान प्रकृति को पूरी तरह नष्ट कर देगा। भीषण गर्मी पड़ेगी।
9. ढ़ोगी व्यक्ति समाज में श्रेष्ठ कहलाएगा।
10. ईमानदार व्यक्ति पेट भी न भर पाएगा।
11. बच्चे अनाथाश्रम में और बुजुर्ग वृद्धाश्रम में पलेंगे।
12. स्त्रियों में ममत्व भाव खत्म होता जाएगा।
13. भोजन और दवाइयों में सिर्फ जहर बिकेगा।
14. अगला पाइंट आप बताओ।

## निम्न उपाय करने से गैस नही बनेगी

गरम पानी पीकर दिन की शुरुआत करो। 2.खाने के तुरंत बाद मत लेटो। 3.सादा और हल्का खाना खाओं। 4.अजवाइन और काला नमक चबाओं। 5.खाना चबाकर धीरे-धीरे खाओं।

## सीनियर सिटीजन इंदौर की मासिक साधारण सभा

इंदौर । जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप सीनियर सिटीजन, इंदौर मानव सेवा में अग्रणी, जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप सीनियर सिटीजन इंदौर की मासिक साधारण सभा स्वतंत्रता दिवस व पर्यटन के रूप में भण्डारी रिसॉर्ट, बेवर्ली हिल्स, रालामंडल, इंदौर पर आयोजित की गई जिसमें शानदार मनोरंजक कार्यक्रम सांस्कृतिक प्रोग्राम आयोजित किये गये ।

## नवकार की साधना से बदल सकती है जीवन की दिशा

इन्दौर । केसरीवाटिका में नवकार महामंत्र आराधना मै राजा कुमार पास के जीवन प्रसंग के जरिये गुरु संस्कार और धर्म प्रभावना का संदेश दिया गया । आचार्य श्री नित्यसेन सूरीश्वर जी ने कहा गुरुदृष्टि और सही संस्कार व्यक्ति के जीवन की दिशा बदल सकते है । आयोजन में 500 आराधक 1000 धर्मालु जन शामिल हुए 100 तपस्वी विभिन्न साधना करे रहे है ।

## जरूरी है संचालक

दो मित्र एक बस में चढ़े । बस डबलडेकर थी । एक ऊपर चढ़ा, दूसरा नीचे बैठ गया । थोड़ी देर बाद ऊपर वाला नीचे आ गया ।

नीचे वाले ने पूछा-'क्या हुआ? इतनी जल्दी क्यों आ गए ?'

उसने कहा-'मुझे यह देखकर बहुत डर लगा कि ऊपर वाले हिस्से में कोई ड्राइवर नहीं है । इस स्थिति में उसे नियंत्रित कौन करेगा ?'

आश्वस्ति के लिये कोई संचालक ड्राइवर चाहिए ।

**- आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी**

## नेम-राजुल का त्यागः प्रेम से परे अहिंसा का अमर संदेश

अहिंसा, करुणा और जीवदया के साक्षात् प्रतीक भगवन् श्री नेमनाथ के जन्म कल्याणक पर अक्षय जैन (नाकोड़ा) का विशेष आलेख ।

जैन धर्म के बाइसवें तीर्थंकर भगवान श्री नेमनाथ दादा का जन्म कल्याणक केवल एक धार्मिक पर्व नही,बल्कि अहिंसा, करुणा, त्याग और आत्मजागरण का संदेश देने वाला पावन अवसर है । यादव वंश में राजा समुद्रविजय अरौ रानी शिवादेवी के घर जन्मे नेमकुमार बचपन से ही असाधारण संवेदनशीलता और करुणा के प्रतीक थे ।

भगवान नेमनाथ के जीवन का सबसे मार्मि प्रसंग उनके विवाह से जुड़ा है । राजकुमारी राजुल के साथ उनका विवाह होने जा रहा था । चारो ओर उत्सव का वातावरण था, लेकिन तभी नेमकुमार ने उन पशुओं की करुण चीखें सुनी जिन्हे विवाह समारोह के लिये भोजन बनाने हेत वध के लिये लाया गया था । उन चीखों से उनके अंतर्मन को झकझोर दिया । उन्होने विचार किया कि मेरे विवाह और मेरे सुख के लिये यदि किसी निर्दोष जीव की हत्या हो, तो ऐसा सुख किस काम का ? और उसी क्षण उन्होने राजपाट, सांसारि वैभव और राजुल के साथ विवाह सबका त्याग कर दिया । यह प्रसंग केवल त्याग की कथा नही है । यह मनुष्य को यह प्रश्न पूछने के लिये विवश करता है कि हमारे सुख की कीमत किसी दूसरे जीव का दुख तो नही ?

नेम और राजुल की कथा भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में प्रेंम की एक ऐसी ऊँचाई प्रस्तुत करती है , जहां प्रेम अधिकार नही, बल्कि समर्पण बन जाता है । राजुल के प्रति प्रेम होते हुए भी नेमकुमार ने जीवदया और धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया । यही कारण है कि नेम-राजुल का प्रेम आज भी त्याग, मर्यादा और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतीक माना जाता है ।

भगवान नेमनाथ ने संसार के मोह और वैभव का त्याग कर आत्मकल्याण का मार्ग अपनाया । उन्होने गिरनार पर्वत पर कठोर साधना की और अंततः मोक्ष प्राप्त किया । उनका जीवन हमें बताता है कि वास्तविक विजय किसी राज्य को जीतने में नही, बल्कि अपने भीतर के मोह, ममता, क्रोध और आसक्ति पर विजय प्राप्त करने में है ।

आज जब मनुष्य सुविधा और स्वार्थ की दौड़ में आगे बढ़ रहा है, भगवान नेमनाथ का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है । जीवदया केवल किसी पर्व या धार्मिक आयोजन तक सीमित न रहे, बल्कि हमारे व्यवहार और जीवनशैली का हिस्सा बने यही उनके जन्म कल्याणक की सच्ची भावना है । आइए, भगवान नेमनाथ के जन्म कल्याणक पर हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर संकल्प ले कि किसी भी जीव को अनावश्यक कष्ट नही देंगे , अहिंसा को जीवन का आधार बनांएगे और हर प्राणी के प्रति करुणा का भाव रखेंगे । क्योंकि नेमकुमार का संदेश आज भी उतना ही स्पष्ट है । जहां प्रेम में करुणा है, वही प्रेम पवित्र है । जहां जीवन के प्रति सम्मान है, वही धर्म जीवंत है । और जहां अहिंसा है, वही सच्चे अर्थो में भगवान नेमनाथ की आराधना है ।

## स्पर्श चिकित्सा
## Nerve Therapy

**भरत गाँधी** 94250-67466

**सुरेन्द्र गाँधी** 94253-49077

4, अनुराग नगर, प्रेस कॉम्प्लेक्स के पीछे, रेनेसा कॉलेज के पास, ए.बी. रोड, इन्दौर
समय – प्रातः 9 से 12, सायं 5 से 8

19/3, नार्थ राजमोहल्ला, गार्डन के सामने, इन्दौर-452 002 (म.प्र.)
समय – प्रातः 11 से 1:30

- सर्वाइकल
- स्लिप डिस्क
- घुटने में गैप का कम होना, सोजन
- गर्दन एवं कमर में नस का दबना सुन्नपन
- हाथ एवं पैरों में झुनझुनी, ताकत कम
- बेल्स पाल्सी अथवा फेशियल पाल्सी
- माइग्रेन अथवा सर दर्द
- फ्रूट एवं एंकल पेन
- चक्कर आना अथवा वरटाईगो
- फ्रोजन शोल्डर
- टेनिस एल्बो
- घुटने में लिगामेंट इंजुरी
- मांसपेशियों से संबंधित
- गैस एसीडीटी, भूख न लगना

बिना दवाई के ईलाज किया जाता है। शरीर के सारे दर्द ठीक किये जाते हैं।

## MALWA FOODS

MALWA Pure Ghee / Milk Powder

Manufacturer & Packer of Malwa Pure Ghee & Milk Powder

Available in : 1 Ltr., 500 ml., 15 kg. Tin, 5 Ltr. Tin Refill & Jar

CHAGANRAJ HUNDIA, DINESH HUNDIA, SATISH HUNDIA

17/1, Baba Balmukund Bhawan, Siyaganj, Indore | Ph. : 0731-2547037, 4979456
Mob. : 98272-21461, 7828048277 | Email : gheemalwa@gmail.com

## अमृत शाह एण्ड एसोसिएट्स
### प्रॉपर्टी ब्रोकर्स

रहवासी ✲ प्लॉट ✲ फ्लेट्स ✲ रो हाउस ✲ बंगलो ✲ टेरेस फ्लेट ✲ पेन्ट हाउस ✲ कमर्शियल प्लॉट ✲ दुकान ✲ शोरूम ✲ ऑफिस ✲ शेड ✲ गोडाउन ✲ इण्डस्ट्रियल ✲ जमीन प्लॉट ✲ रोड फेक्ट्री ✲ मशीनरी ✲ इण्डस्ट्रियल यूनिट

खरीदना ✲ बेचना ✲ किराये पर लेने–देने हेतु सम्पर्क करें।

जी–1, रुचि अपार्टमेन्ट, 108/47, न्यू अग्रवाल नगर, इन्दौर 452 001
फोन : 0731-2464464, 4284545, 09302504646, 09425055036

## Aieroc
Pure Veg

Café & Banquets

*Jain Food Available For Banquet Parties

*Jain Food By KILO Home Delivery Available

*Capacity 25-125 Pax

Call-73599-42222

Lunch, High Tea & Dinner Packages Available.

Add:- Aieroc Café, Scheme No-140, Behind Kerala Bakery, Indore

Ajay Bhandari 9425903531
Aaveg Bhandari 9826090899

## Bhandari Fabricators
Don't compromise - customize

Expertise In :
- Corporate Furniture
- Hospital Furniture
- Residential Furniture
- School Furniture

89/1, Snehlataganj, Indore 452 003, Email : bhandari.fabricators@gmail.com

॥ श्री केशरियानाथाय नमः ॥ श्री दादा जिनदत्त मणिधारी कुशलसूरी गुरुभ्यो नमः ॥

A journey of thousand miles begins with a single step

Excellence of 34 Years

**निलेश बापना** 94253-22032

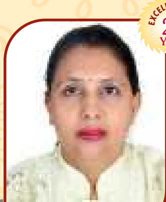

Excellence of 24 Years

**निधि बापना** 98260-21458

आर्थिक हानि एवं मानसिक परेशानियों से छुटकारा पाईये
त्वरित सेवा, तुरन्त दावा निपटारा की सुविधा पाईये

Excellence of 5 Years

**NAYAN BAPNA** 97559-70421

LIC · HDFC ERGO Take it easy! · ADITYA BIRLA CAPITAL LIFE INSURANCE · TATA AIG INSURANCE · युनाइटेड इंडिया UNITED INDIA

बीमा सम्बंधित त्वरित सेवाएँ: LIFE | HEALTH | MOTOR | HOME | TRAVEL | FIRE

### MUTUAL FUND DISTRIBUTOR
- Compounding Benefits
- Investment Growth
- Long-Term Stability
- Transparency
- Quick & Hassle-Free Claims
- Personalized Solutions

## बापना इन्श्योरेंस एण्ड क्लेम कंसलटेंट
*We Cover Your Entire Risk*

1st Floor, 66 Jawahar Marg, Nandlalpura Squre, Indore | Ph.: 0731-4675004 | Email : nidhibapna24@gmail.com

चिकित्सा विज्ञान की आधुनिक सेवाओ सहित, हृदय रोग, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्राल, अस्थमा, टी.बी., गठिया एवम बुखार की उन्नत चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वकांक्षी केन्द्र

## सोनो मेडिकल सेन्टर

16/1, साउथ तुकोगंज ( समवशरण जैन मंदिर के पास ), इन्दौर
फोन- 2512177, 2512977

**सुविधायें:-**

- कम्प्यूटराइज्ड ट्रेड मिल टेस्ट - एन्जाइना एवम् हृदय रोग निदान
- इकोकार्डियोग्राफी - हृदय क्षमता परीक्षण एवम् वाल्व संबंधित रोगों की जानकारी।
- कलर डापलर - हृदय के वाल्व, जन्म के हृदय विकार, एवम् खून की नलियों की बीमार का निदान।
- इ.सी.जी. एवम् होल्डर मॉनीटर - 24 घंटे सतत हृदयगति की जानकारी ( दैनिक दिनचर्या के दौरान )
- सोनोग्राफी - पेट की बीमारियों का निदान
- पेथालाजी एवं एक्सरे - समस्त प्रकार के रक्त परीक्षण एवं एक्स-रे जाँच
- स्पायरोमेट्री - फेफड़े, श्वांस क्रिया एवम् अस्थमा की जाँच
- हेल्थ चेक अप - उपरोक्त सभी उन्नत एवम् आधुनिक उपकरणों द्वारा किफायती हेल्थ चेकअप पैकेज।

डॉ. बसन्त लूनिया एम.डी. ( मेडिसिन ) कन्सल्टिंग फिजिशियन
हृदय एवम् पेट रोग विशेषज्ञ

## श्री नाकोड़ा साड़ी सदन

डिजाइनर, लंहगा-चुन्नी एवं फेन्सी साड़िया

9, शेखावत मार्केट, सीतलामाता बाजार, इन्दौर - फोन 2459783-84, (R) 2542422

प्रेषक :

# जैनप्रतीक

मनी आर्डर, शिकायती पत्र, वर्ग पहेली के उत्तर, पत्र, पत्रिकाऐं, पत्र व्यवहार, समाचार, लेख आदि सभी निम्न पतें पर भेजें।


प्रधान सम्पादक : नरेन्द्रकुमार रांका
101, बोथरा इन्क्लेव, 1/1, डॉ. आर. एस. भंडारी मार्ग, आर.सी.एम. ग्रॉड के सामने, इंदौर


पता न मिलने पर पत्रिका प्रधान सम्पादक के पते पर लौटाये।


श्री जैन सेवा समिति श्वे., इन्दौर के लिए विमल नाहर द्वारा 52, भगवान महावीर मार्ग, इन्दौर से प्रकाशित एवं रेनबो प्रिन्ट, एल.जी. 24,बड़वानी प्लाजा, इंदौर से मुद्रित


प्रति,

पुस्त प्रेष्य